धरती प्रकाशन
गंगाशहर बीकानेर
ध.प्र

जगिया की वापसी

अन्नाराम 'सुदामा'

शिक्षा और शिवोन्मुखी
प्रेरणास्रोत
श्रद्धेय गुरुवर
श्री कश्मीरीलालजी गुप्ता
को सादर

स्कूल की छुट्टी हो गई। मास्टर मनोहरदास घूमते-घामते सुजान अहीर के घर पहुँच गए। घर तो क्या झोपड़ा ही कहना चाहिए उसे। गाँव के उत्तरी छोर पर है यह। ऊपर राखिया फस, कही छीदा कही गहरा। उजाला अनेक जगहो से अन्दर झाँकता है। कुछ ही महीनो पहले, एक कच्चा कोठा होता था झोपडे के पास। वह इस बरस बरखा मे ढह पडा। दीवारें उसकी अब भी खडी हैं—गोबर उतरी, टूटी फटी और अधनगी। किवाड की जगह बाड है उसमे। रात भर सुजान की दो बकरियाँ बधती हैं वहाँ। घर के चारो ओर पुरानी बाड है, अनेक जगह जिसमे, खीपें और आक उगे हुए हैं।

"अरे, जगिया की माँ, घर मे हो क्या," मनोहरदास बाहर से ही बोले। आवाज के साथ ही, झोपडे से एक औरत निकली—मटमैला-सा घाघरा, पीली पुरानी ओढनी डाले। मनोहरदास आगे बढ आए। औरत गोरी, उदास और दुबली पतली थी। हाथ उसके गारे से सने हुए थे। वह हाथ जोडकर बोली, "पधारो गुरुजी, कैसे किरपा की ?" कहने के साथ ही उसने आगन मे पडी खटिया उनके आगे सरका दी।

"अरे नही, इसकी कोई जरूरत नही, भले ही काम करो अपना, मुझे तो केवल दो ही टूक बात करनी है—आधा मिनट के लिए।"

"काम तो जीवन भर करना ही है गुरुजी आए है तो दो

मिट तो विराजो।"

बैठ गए वे। गाँव आए इन्ह माल भर हुआ है। प्राथमिक पाठशाला के एकमात्र अध्यापक ह ये। आयु चालास के आसपास है। आगरा की तरफ के ह— भले और खटकर खाने वाले। बोले, "अरे भई, जगिया को पढने नही भजती ?"

"भेजती ता हूँ गुरुजी।"

'हाँ भजती तो हा, सावन मे पाँच दिन आया, फिर महीने भर गायब। उसके बाद फिर चार-छह दिन टपका, फिर बन्द। पिछले दिनो और दोखा एक दो वार। अब दो दिन से पता नही कहाँ रहता है ? नौ दिन मे ढाई कास, ऐसा ही होता है भेजना।"

वह गुरुजी की ओर देखती रही। एक विवशता उसके चेहरे पर तैरने लगी। वह बोली, "यह फटा आगन, ये फूटी दीवारे और वह बीमार झोपडा आपके सामने है गुरजी। दिन-भर कही न कही लगी ही रहती हू इनम। बडा छारा मधिया, सुबह से शाम तक बकरिया के पीछे फिरता है रोही (जगल) मे। उसे रोक लू तो खाएँ क्या, इसलिए इसे राक लेती हूँ कभी-कभी। अभी दो दिन से लगा रखा है इसे, मैं लीपती हूँ, वह तगारी झलाता है, (पकडाता है।) गारा गिलोता है। मेरा तो शरीर ही बरी हो गया समझो। गार मे पर दिए और दम, जुकाम आ लगे।"

मनोहरदास ने नजर इधर-उधर दौडाते हुए कहा, "खर एक दो दिन की ता, कोई बात नहीं, ज्यादा नागा होने मे बहिन, लत टट जाती है लडके की।"

"लत तो गुरुजी टूटनी है एक दिन, आज नही तो कल।"

उन्होने क्षण-भर उस उदास अलसाए चेहरे की ओर देखा, फिर बोले, "सो तो ठीक है जगिया की मा, लकिन तुम्हारे इस छोरे की पकड बडी तेज है, होनहार निकलेगा तब कहता हूँ। पढ जाएगा तो सुख पाएगा वह, और सुख पाओगी तुम।"

"सुख, मुझ तो गुरुजी मसान (श्मशान) मे मिलेगा।"

"क्या, ऐसी क्या बात है?"

"बात ऐसी ही है, पढाई इसकी तकदीर मे ही नही है इसलिए।"

"अरे तक़दीर किसीका किसने देखी है, वह ता बनाने से बनती है।"

"बनती होगी किसीकी, इसकी तक़दीर पर तो भूख का पहरा है।"

"भूख का पहरा ता आलसियो के लगता है।"

"क्या हुआ गुरुजी साल छह महीना और धिका लिया तो? पेट भर रोटी तो रोज चाहिए या नही?"

"चाहिए ही वह ता, पर पढाई की भी एक उम्र होती है जगिया की मा।"

"और रोटी बिना, ऊमर किसको आएगी गुरुजी? बत्तीस साल की ऊमर मे मेरा यह हाल है कि दो तगारी उठाने मे दम फलता है।"

उन्होने उसकी ओर एक बार और देखा गौर से। गोरे पीले चेहरे मे दो बडी और बुझती-सी आखे। उसके चौडे और चौरस चेहरे पर झुरियाँ विश्राम ले रही है। 'निश्चय ही चिन्ता और गरीबी ने, इसे समय से पहले ही निचोड कर रख दिया है,' उन्होने सोचा। वे बोले, "तुम्हारा कहना भी ठीक है, लेकिन पढना भी हरेक के बस का नही है। रुपया पसा खूब होने से ही कोई खूब थोडा ही पढ लेता है?"

"क्यो गुरुजी?"

"अरे भई, सबको बुद्धि इकसार थोडी ही होती है? एक बात और है, जगिया की माँ, कि पढाई मे ज्यादातर नामी-गिरामी गराब ही निकलते है।"

यह उसकी समझ मे नही आया, उसने गुरूजी की ओर जिज्ञासु भाव से देखा। वे बोले, "तीस पैंतीस छोरे हैं मेरे पास, तुम्हारा जगिया सबसे तेज जचा मेरे को, तेज ही नही, समझदार भी।"

समझदार कहा तो उसके उदास पतले होठ कुछ फल गए और उनके नीचे से सफेद महीन दाता की कोर, पल भर दोखकर ओझल होगई। बोली, "हा समझदार तो बडा है यह, साठ बरस आ गए इसको, नौ बरस तो कन पूरे किए हैं इसने।

"आठ का है या साठ का, बरस से मुझे मतलब नही। मैं तो कहता हूँ, है समझदार, और इतने मे जगिया झोपडे के पीछे से, गारे की तगारी लिए आ गया।

दोवटी का मटमला सा कछिया, बाका सब नगा। गेहुवा रग, पतले होठ, तीखा नाक, दुबला-पतला पर आंखो मे विश्वास और इन सबके ऊपर, चेहर पर खेलता उसका मोहक भोलापन। तगारी रखकर, 'प्रणाम गुरूजी' कहकर, खडा हो गया वह और एकटक गुरुजी की आर देखने लगा।

"क्यो रे जगिया, पढगा कि नही," उन्होंने पूछा।

उसने एक बार माँ की ओर ताका, फिर गुरूजी की ओर। होठो पर कोई उत्तर नहीं, हा आंखो म उसका कुछ सकेत अवश्य था।

"अरे बाल तो सही कुछ ?"

धीमे से बोला, "माँ जाने।"

"और राटी खाएगा, पानी पिएगा, तब भी माँ जाने ?"

वह बोला नही, एक बार उनकी ओर देखकर, नीचे देखने लगा, मानो सोच रहा है कि उसका उत्तर ठीक है। वह अपने उत्तर का फिर दोहराना चाहता था, पर नही दोहराया उसने।

गुरु बाले "अर बरसा वाले दिन, नीम का गट्टा गोदकर

लाया था तू ?"

"हां।"

"लगाया था स्कूल के आगे तैंने ?"

"आपने ही कहा था गुरूजी।"

"अरे कहा तो मैंने सभी को था, लेकिन लगाया तो एक तून ही था न ?"

"हाँ।"

"कभी सम्हालते भी हो, क्या हाल है उस तुम्हारे साथी का ?"

"परसो दीतवार को तो पानी दिया था गुरूजी।"

"मैं कहा था तब ?"

"रामपुर गए थे आप।"

"अरे हा, कस्बे चला गया था सुबह सुबह ही—सामान लाने। और क्या क्या किया तूने वहाँ ?"

"कुछ बाड लगाई उसके।"

"बढ़ा है कुछ ?"

"नए पत्ते तो दो-एक निकले है गुरूजी।"

"ऊँचा भी आया होगा कुछ ?"

'हाँ थोडा-सा।"

"बहुत अच्छा, तब लग जाएगा वह तुम्हारा नीम, ध्यान रखना वह सूखे नहीं, उसे बकरिया न खाएँ, ठीक है न, ध्यान रखोगे ?"

उसने सिर नीचे की ओर करके हाँ भरी।

"अरे सारे छोरे कहते है, यह जगिया का नीम है गुरूजी।"

वह गुरूजी की ओर देखने लगा।

जगिया समझदार है या नहीं, उसकी माँ चाहे न समझी हो लेकिन गुरु चेले की बात से साफ हो गया कि गुरूजी ने बिलकुल

निराधार नही कहा—उसके बारे मे।

हाथ से सकेत करती उसकी मा बोली, "जा रे, खाली कर द तगारी उम कोने मे, हाथ पग धोल, बाकी कल लीपूगी।

वह चला गया। गुरूजी उठते-उठते बाले, "बडा छोरा मधिया क्या कुछ कमा लेता है ?"

"तीस-पैंतीस रुपिया महीने मे।"

"दस-बारह बकरियां होगी वास की ?"

"किसी महीने मे दो ज्यादा किसी मे दो कम।"

"क्या चराई है आजकल ?"

"तीन रुपिया बकरी।"

"क्या हो, रुपया सवा रुपया रोज से ?"

"दो ढाई कीला लोख (खेजडे की पत्तिया) ल आता है रोज।"

"उसे ?"

"पटवारी का दे देता है।"

"क्या मिल जाता है उसका ?"

"तीस पैसे रोज।"

"चलो नौ रुपए महीना यह हुआ। मरते डूबते डेढ रुपया रोज ही तो हुआ, क्या हा इससे ? नही-नही करते दो-ढाई कीलो नाज तो चाहिए ही तुम लोगो को रोज ?"

"हा चाहिए ही।"

"तो चल जाता है इतन से काम ?"

वह उदास भाव से बोली, "हा चल ही जाता है, न पूरी तरह से मरते है, और न ठीक से जीते है।"

"छोरो का बाप भी तो देता ही होगा कुछ ?"

उसके चेहरे पर उदासी और घनी हो गई। अनेक पीडाएँ उस पर बनी और बुझ गई, वह निराश स्वर म बोली, "हा देता है

गुरुजी, देता क्यो नही ।" बोलती बोलती क्षणभर के लिए चुप हो गई, वह शायद कहना नही चाहती थी पर पीडा बाहर आए बिना मानी नही । बोली, "देता है गुरुजी, खूब देता है—तकलीफ दता है, गालियाँ देता है । ले लेती हूँ बिना किसी को सुनाए । आज तीन दिन हो गए, पता नही, कहाँ है ?"

"कहकर नही गया ?"

"कहने का कोई मतलब नही होता गुरुजी ।"

"क्यो ?" उन्होने अचम्भे से पूछा ।"

"झूठ के जीभ ही होती है गुरुजी, पैर नही होते ।"

"सुना है शराब पीता है ।"

"ठीक ही सुना है ।"

"कुछ तो कमाता ही होगा ?"

"होगा हो ।"

"आता है तब ?"

"रोटी टुकडा जसा होता है, परोस देती हूँ, और वह मुझे परोस देता है । जचा तो खालिया, नही तो," वह रुक गई ।

"नही तो ?"

"नही तो होहल्ला करता थाली फेंक देता है, अघघडी की बात होती है, मैं सुन लेती हूँ चुपचाप, कुछ नही बोलती ।"

' बोलना चाहिए तुम्हें ।"

"पास-पडोस को जमा करलू, लाभ कुछ नही, बोलू तो बदनामी, नही बोलू तो कमजोरी—मार मुझे ही है ।" वह बन्द हो गई । चेहरे पर उदासी का आवरण घना, और आखें गीली । उसने धीरे से आँखें पोछ ली । होठ फिर खुले—

"मेरे कोई बीमारी नही गुरुजी, बस यही एक मोटी बीमारी है, कहा जाऊँ, न पीहर म जगह, न यहाँ," और आखें फिर टपटप चू पडी ।

गुरुजी का अन्तर भी गीला हो उठा। वे बाले, "अरे घूर क भी दिन आते है, गलो मत, तुम्हारे भा दिन आएँगे—ऐसी क्या बात है ?"

"कमाओ चाहे मत, गुरुजी, कम से कम दुख ता नही द। खेत बेच दिया पहले ही। सिफ दस बीघे का एक टुकडा है पगो के नीचे।"

"हुआ उसका भूलो, कल से तुम जगिया का पढने भेजो, समझी ?"

उसने गुरुजी को ओर देखा, फिर एक दुविधा उसके चेहरे पर तैरने लगी। बोली, "गुरुजी, कल मगू मिस्तरी आया था, हर साल खेती करता है यहाँ। बोला, महीना भर जगिया को द दा, खलहे (खलिहान) पर बैठा रहेगा—सुबह आठ बजे मे शाम के पाच-छह बजे तक। फिर मैं पहुँच ही जाऊँगा। डेढ रुपया रोज दे दूगा। रुपिए उसने अगाऊ दे दिए मुझे। तीस मथरू बनिया के थे, वह रोज तगादा करता था, क्या करती ?"

"मतलब महीना भर वह और नही आएगा ?"

"हा," उसने धीरे से कहा।

"कर लेगा यह खलहे को रखवाली ?"

"बठा ही तो रहना है दिन भर वहा। डागर ढोर कोई आएगा तो घेर देगा। शाम को मिस्तरी पहुँच जाएगा तो यह घर को रवाना हो जाएगा।"

जगिया फिर आ गया। बडा पहने, हाथ पर धोए हुए।

गुरुजी ने उसे एक बार गौर से देखा, इतना गौर से जितना पहले कभी नही। कलाइयो और पिंडलियो पर नन्ही नन्ही भूरी रूआटी (रोमावली) और आखो मे जागरूकता। वे बोले, "कल से खलहे पर जाएगा रे ?"

"हाँ," वह धीरे से बोला।

"पहन भी कभी गया है उसके खेत ?"

"हाँ पर (पिछन साल) कई दिन।"

"जाते समय मिस्तरी रोज, अपनी साइकल स्कूल मे ही तो रखता है ?"

"हाँ।"

"कल जाते समय तू भी ता स्कून के आगे से हो जाएगा ?"

"हाँ।"

"पहली पाथी तुम्हे दूगा, दिन म समय मिले तो, दखा-दख दो चार पट्टी भरना, ठीक है न ?"

उसने आज्ञापालक भाव से सिर नीचा किया, बोला, "ठीक ", और गुरजी चल दिए।

□

२

गुरुजी उसको रोज सुबह सात सवा सात बजे, स्कूल के आगे से गुजरता देखते है। दावटी के एक गलने मे रोटी बन्धी है। पैर नगे हैं। हॉकीनुमा बोरटी का एक गेडिया कन्धे पर है। उसके एक छोर पर बन्धी रोटी लटक रही है। फुर्ती से जा रहा है—कोई जवान मोर्चे पर जा रहा हो जसे।

स्कूल के पास से कच्ची सडक शुरु होती है, कस्बे को जाती है। स्कूल के पास से ही खेतो को जाने के लिए माग है, और आगे उससे निकलती कितनी ही पगडण्डिया। दो मील पडता है यहाँ से मिस्तरी का खेत।

गुरुजी ने एक दिन पूछ लिया जगिया से, "क्या माल-ताल है रे गलने मे ?" उसने तुरत गलना खोलकर आगे कर दिया।

"अरे, नही-नही, रहने दे, मैं तो यो ही पूछ रहा था।" उन्हें कहते कुछ देर लगी, लेकिन जगिया के ढील कहा थी ? बाजरी की डेढ रोटी, मिर्च की थोडी सी चटनी, यही उसका माल ताल था।

"रोज यही खाता है रे ?"

"हा।"

"कभी गठ्टा (प्याज) भी नही ले जाता ?"

"लाए हुए नही है।"

"ले थोडी गुड की डली दू, नया गुड है मेरठी (मेरठ का)।

"नही," उसने फिर से गाँठ लगाली गलने के, और चलने लगा।

"अरे खेत मे ककडी मतीरे नही हैं ?"

चलता चलता ही बोला, "गुरुजी बेलें कातरा, (फसल खाने वाला एक कीडा) खा गया।" और पाच सात मिनट मे ही वह चलता-चलता, घुमावदार पगडडियो मे ओझल हो गया कही।

शाम को आता है तब तक दिन छिप जाता है, फिर भी कभी कभी देर सवेर अपने नीम को दो बाल्टी पानी दे जाता है। स्कूल मे एक कुण्ड है। उस पर छोटी सी एक बाल्टी पडी रहती है—डोरीवाली।

आठ सवा आठ बजे सुबह, मिस्तरी एक दिन साइकल निकाल रहा था—बरामदे मे से। रोशनीघर पहुँचने का समय दस बजे है। आज खेत से दस बीस मिनट वह जल्दी आ गया था। गुरुजी ने पूछा, "क्यो मिस्तरीजी यह छोकरा कर लेता है खलहे की रखवाली ठीक मे ?"

"अरे मत पूछो माट्साब, टाईम का भी पक्का और ड्यूटी का भी। पडोसी खेतो के छोरे, आवाज लगाते हैं, आव जगिया लूणाघाटी (एक राजस्थानी बाल खेल) खेले पर यह खोह के खूटे की तरह टस से मस नही होता—अपनी जगह से। गाय बकरी को आती है तो भगा देता है। चार्ज जैसा सौंपकर जाता हू, वापस वैसा ही मिल जाता है।"

"तब तो सौदा बडा सस्ता पटाया आपने ?"

कुछ मुस्काता हुआ बोला वह, "सस्ता और टिकाउ दोनो कहिए, बात यह थी माट्साब, छुट्टियाँ बाकी थी नही, तनखा कटाकर लेता तो बडा महगा पडता। छोरा पहले का परखा हुआ था, इसलिए इसी को पकड लिया।"

"छोरा पढने मे बडा होशियार है पर घर की हालत आप जानते ही ह।"

"अरे जानता हूँ साब, खूब जानता हूँ, दात ह वहा चने नही,

चने हैं वहाँ दात नही। बाप साला पियक्कड है, खोडा है न खाडा, सौ ऐब हाले है खोड मे।"

"और औरत बिचारी—"

वाक्य पूरा ही नही हुआ था, उससे पहले ही मिस्तरी बोला, "अरे, मत पूछो धीरज की जीती जागती मूर्ति है वह, लेकिन है तकलीफो से हिला हिलाकर भरी हुई। फिर भी मजाल है, जरा भी छलक जाए इधर उधर। बडी समझदार है साब।"

"छोरे की थोडी मदद करो मिस्तरीजी।"

"अनाज निकाल लूगा तो आधा कुँटल मोठ और दे दूगा माट्साब, और तो क्या करूँ ?"

"अरे इतना तो बहुत है, तीन रुपये पड गए इसके तो रोज के। बात का रूख बदलते हुए बोले, "अनाज कितना हो जाएगा इस बार ?"

"सब मिलाकर पन्द्रह बोरी से कम तो नही होना चाहिए, फिर हरिइच्छा।"

इस तरह उनमे कई बार बाते होती, और प्रसग अप्रसग जगिया उनमे कही न कही जरूर होता।

× × ×

खलहे मे मोठ और गवार के दो ढेर लगे हैं— अलग अलग। आस पास के कुछ और खेता म भी, ऐसे छोटे मोटे खलहे है, जिनम कोई इक्का-दुक्का किसान रहता है। अधिकतर खेतो की धरती उदास और सुनसान है। आस पास अस्सी प्रतिशत अकाल है, वर्षा की कमी से कम, कातरे की कृपा से ज्यादा। कही कही ढाल और टीबा की तलहटिया मे बकरिया या रेवड चराते हुए दो पाँच छोरे, किसी टीबे पर खेलते कूदते दिखाई पड, यह बात अलग है। सूने पशु (जिनके पीछे कोई चराने वाला नही) दो चार, इधर उधर खलिहानो मे मुह मारने की ताक म डोलते फिरते हैं।

जगिया गाव मे दो मील दूर, ऐसे उदास एकान्त की उपासना करता है—सियाचिन और लद्दाख के पहरूए की तरह।

अपने बूते के अनुसार पूरी चौकसी रखता है। स्त्रेह के पास एक छोटी सी खेजडी (शमीवृक्ष) है—हरी और गहरी। उस पर किट किट करती दो तीन गिलहरिया, एक दूसरी का पीछा करती, जरूर कई दफा उसका ध्यान खीचती है। खेजडी की छाया म, साफ बालू पर बठा, वह दो चार पट्टी भी लिखता है दिन मे। बीच-बीच मे सजग नजर से इधर उधर झाक भी लेता है। तीस चालीस कदम पर कोई पशु आता दिखाई पडता है तो खडा होकर आवाज लगाता है, धणी (मालिक) मरे तुम्हारा किधर आता है आगे,"

फिर गेडिया उठाता है, दिखाकर कहता है, "दखता है कि नही, सीधा ख पडी पर मारूँगा, हट, भाग, सुना नही, किधर ग्राता है, मारूँगा।" बडे निश्चय ग्रौर बुल‍द ग्रावाज से कहता है वह। साधारणतया, अपने सहज स्वभाव से पशु ग्रावाज सुनकर ग्रौर तने हुए गेडिए को देखकर, अपनी दिशा बदल लेता है।

दो तीन बार उठता है, खलहे के चारो ग्रोर घूम लता है। कही कोई चरतोनही गया है—थोडा भी। 'ग्ररे रात को मिस्तरी जी की टैम मे काई गाय ग्राई दीखती है खोज (परो के निशान) पडे है। कोई हिरण (हरिण) ग्राया है।' इतना ध्यान है उसको।

एक दिन वह खेजडी की छाया मे बैठा, पटटी लिख रहा था। रामधन कुम्हार की दो बकरिया इधर ग्रा गइ। खेत-पडौसी है वह। बूढा ग्रादमी है। खेत खलह का काम ता ग्रब विशेष होता नही उससे। कई दफा कोई छोरा नही हाता है, तो भ्रपनी दो बकरियो के पीछे हो लेता है। ग्राप तो खेजडी के नीचे कही बैठ गया ग्राराम करने। जगिया ने तीन दफा बकरिया घेर दी। चौथी दफा फिर ग्रा गई वे। वह उठा। उसे ध्यान ग्राया, खलिहान मे एक रस्सी पडी है—मिस्तरीजी की खाट के नीचे। फुर्ती से रस्सी वह उठा लाया। दोनो बकरियो को उसने खेजडी से बाध दी। ग्राध-घण्टे बाद रामधन उनकी टोह मे इधर ग्राया। डोकरे ने सोचा, बकरियाँ तो मिल ही गइ—वे ब‍धी सामने। छोरे की थाह तो लू—देखू कितनी है? पास ग्राकर, जगिया को बोला, "बकरियो को क्यो बाँधा है रे?'

"खलहे मे घुसती हैं बार बार।"

"खलहा तुम्हारा है?"

"मिस्तरीजी का है।"

"तो तूं क्यो रोकता है?"

"रोकूँ नही, वह पैसे देते हैं न मुझे रखवाली के।"

दूसरे ने कहा, "फेर काच री गोळी खेलम्यां।"
(फिर काच की गोलिया खेलेंगे।)
'कोई जिनावर खळै मे आ वडै तो ?" उसने कहा।
(कोई पशु खलिहान मे आ घुसे तो ?)
तीसरा बोला, 'तो थारै बापरो काई जावै है ?"
(तो तुम्हार बाप का क्या जाता है ?)
"अर हू नही चालू तो थार बापरो काई जावै है ?"
(और मैं नही चलू तो तुम्हारे बाप का क्या जाता है ?)
उसने नहले पर दहला मारा। छोरे उदास होकर, चुपचाप लौट गए। जगिया का विश्वास फैलकर चौडा हो गया। उसकी आखो मे—उसकी चेतना मे।

जगिया ने एक महीना मिस्तरी के खलिहान पर पूरा कर दिया—आनन्द और आस्था से। कार्तिक चला गया मगसर भी गया समझो—दो एक दिन और है। करीब एक माह से, वह बराबर स्कूल आ रहा है। नागा केवल एक ही दिन हुआ है, वह भी उसका वश नही था। मा ने अधिक कहा तो क्या करता, वह, और मा के आगे एक जीवित परेशानी लठिया लिए हुए खडी थी। जगिया को नागा करने के सिवा और कोई चारा नही था उसके सामने।

बात यह है—गाव मे एक चौधरानी है—पचास से कुछ ऊपर। विधवा है। सावला रग, साढे छह फुटी। वजन कुटल से कम नही। बडा नाक, होठो की मोटाई औसत से डबल। हाथ मे लठिया रखती है। बडी धाकड लुगाई है। काम ब्याज बिस्वे का करती है। मजाल है उसके सामने आसामी कोई चूचप्पड कर ले। कर ले तो वह भरे बाजार मे पगडी उतार लेती है उसकी। पूजी पाच सात हजार है उसके पास। ब्याज, मुँह देखती है वैसा ही ले लेती है, बस सीधा हिसाब उसका पैसा रुपया रोज है।

जगिया की माँ जानकी ने बीस दिन पहले दस रुपये लिए थे उससे। राव (जाति भाट) आया था उनका। कुल का राव है, उसे कुछ न कुछ दान-दक्षिणा देनी ही होती है। वह कहता है, "माँ-सा, इक्कीस रुपये देकर कम से कम, घोडे का दान तो लिखवाओ ही। देखो, पडोसी जजमानो (*यजमान*) ने तो इकावन और एक सौ एक देकर, ऊँट और हाथी के दान लिखवाए हैं। सूरज-

सिंह ने तो पोते की बधाई मे कान पीले करवाए है मेरे।" जानकी ने सहज भाव से कहा, रावजी, कमाई दे भगवान तो, मैं तो राजी-राजी हाथी का दान ही लिखाऊँ और वह भी सजाई समेत। आप कहते है कान पीले की, मैं कान और गला दोनो पीले कर दू आपके। आप देखते है, यहाँ तो सुबह रोटी मिल गई तो साझ की फिकर पहले लग जाती है।

राव ने उसके पीले उदास चेहरे की ओर, अपनी पारगामी नजर से देखा। उसे इन तिलो मे ज्यादा तेल की गुजाइश लगी नही। बोला, "मा सा, उम्मीद तो बडी थी, चलो जाने दो, घोडे का दान ही सही।"

"नही रावजी, इस समय इक्कीस तो मेरे से किसी तरह पार नही पडेंगे, ग्यारह रुपए भी इधर-उधर से कवाडूगी, वे भी पार पड जाय तो समझो।'

"ग्यारह दागी ता भी लिखूगा तो घोडा ही, सादे (साधारण) दान की लीक पड जाती है हमेशा के लिए, वह ठीक नही, आखिर, माँ सा, यह घराना कौनसा है।" रुपराम का खानदान, जिसमे लाख पसाव देने वाले हुए है।"

हाथा-जोडीकर, वडी मुश्किल से वह, दस रुपये चौधरानी से लाई—दस पैसे रोज ब्याज मे। कजूस के धन की तरह घर मे एक रुपया बडे जतन से रखा हुआ था। तेल मँगाऊँ या मिच या चाय चीनी, इस दुविधा मे वह खच नही हुआ था। आज वह दुविधा मिट गई, उसे मिलाकर राव को किसी तरह राजी कर दिया। बोली "भगवान ने चाहा तो अब की दफा और राजी करूँगी आपको।"

"अच्छा माँ सा, घोडे का दान, अश्वमेघ समान, खूब फलो-फूलो जजमान, बधो (वढो) उसकी वेल," कहकर चला गया। क्षण भर का एक सतोष जानकी के चेहरे पर नाचकर, उसकी

चेतना में डूब गया।

पन्द्रह दिन बाद चौधरानी आई सुबह-सुबह ही। बोली, "बहू सुन, कोठा निपवाने के लिए गारा मिलाने वाला नहीं मिला, जगिया को भेज। लीपने के लिए तो, मूलो मेघवाली का कह आई हूँ, बीस रुपए हैं उसमे मेरे।" जानकी ना नहीं कर सकी, आधे महीने का व्याज चढा हुआ है उसके।

जगिया चला गया, चौधरानी के पीछे-पीछे। तगारा और फावड़ा के लिए उसने। सुबह आठ बजे गया था, रात को आठ
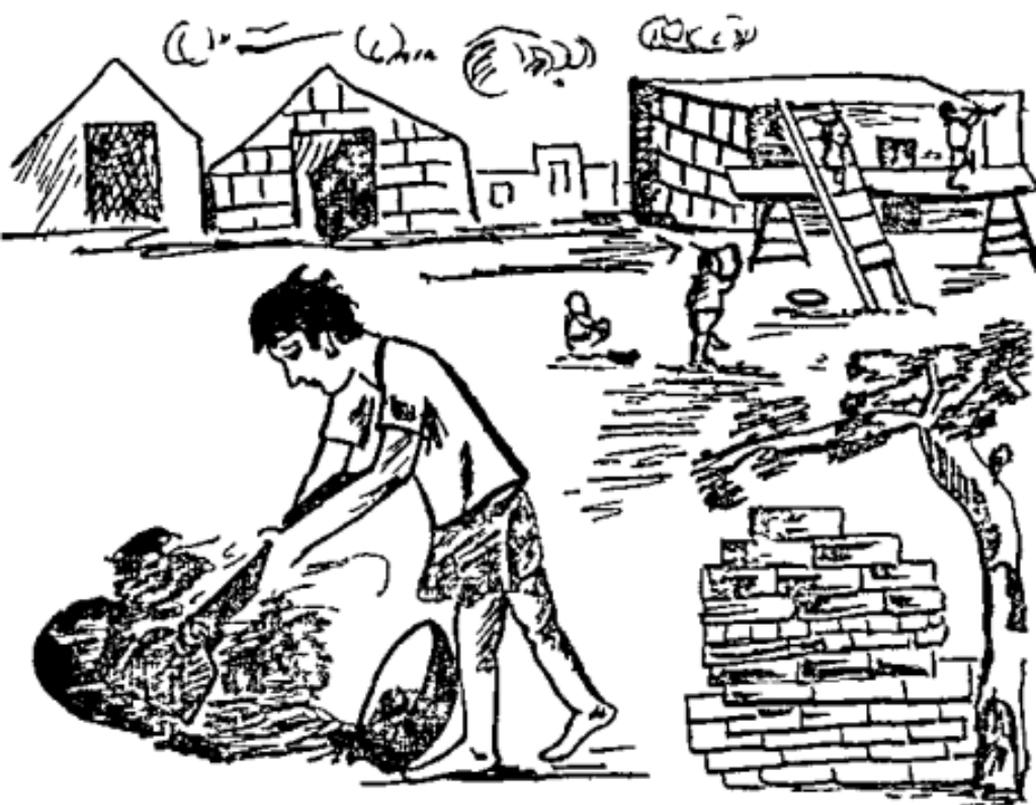
बजे छोड़ा उसे। आध घण्टा, एक बार 'दोपहरा' करने घर आया था, और तो दिन भर उसने गदन ही सीधी नहीं की। चूर चूर

हो गया वह। अभी एक दिन का काम और रह गया था। चौध-रानी ने दूसरे दिन के लिए फिर कहा जानकी को। उसने हाथ जोड़कर लाचारी प्रकट की। चौधरानी इस पर नाराज हो गई। बोली, "पटक मेरे पसे अभी के अभी।"

' दे दूगी भाभीजी पाच सात रोज मे, घर आकर दे जाऊँगी, धीरज रखो," जानकी ने दबी ज्वान से कहा।

फिर भी वह भड़क उठी, "भलाई का जमाना ही नहा है, कसी वेला मे दिए थे। "परो के हाथ लगा रही थी उस समय तो।"

"ता मै. ना कब करती हूँ भुवाजी ?"

' हाँ, ना मैं नहो जानता, अगल महीन म व्याज म द्रह पसे रोज लगगा, यह सोच लेना।"

"दूगी, लगेगा तो भुवाजी।"

वह चली ता गई, लेकिन दूसरे दिन ही सुबह-सुबह फिर आ टपका वह ता। घूमती-घामती दिन म एक चक्कर तो काट ही जाती है। सुना देती है, "पसे की मुझ जरूरत है, चार आदमी सुन ऐसा काम न हो बहू, कर देना पमा आजकल मे।" बानगी का उसका मुह भी ता नही पकडा जाता, स्वभाव है उसका। जानकी मानती है, 'यह घोड का दान ना महगा पडा, पर अब कोई उपाय भी ता नही – ठीक है हुआ सो।'

पाच सात राज म घर मे बिना तल ही काम चलता है। दो टीपनी तल उठरे म रख छोडा है—अचानक कोई बटाउ आ जाए ता। साचा कुछ थेपडियाँ (उपले) पडा है बच दू। चाय नही है। पिछल महीन स चोनी की जगह गुड डालती हूँ, अब वह भी खतम है। रुपया एक था, वह भी गया। मिच मँगाऊँ या तेल या गुड, क्या मँगाऊँ, चलो इस उलझाड मे पिड छूटा। पास मे कुछ है ही नहो तो मँगाने का सवाल ही नहीं उठता। एक दिन निकल

गए तो दो दिन और निकल जाएँगे। उसने तय किया कि कल जगिया को भेजकर महीने की चराई मँगाऊँगी, तो पहल चौधरानी को चुकाऊँगी। गुड, तेल और मिच एक दफा भाड मे पडने दो। अनाज तो कुछ मँगाना ही पडेगा। वह उठा। जगिया दो कडाही पोठे (गोबर) लाया था, वे पडे है, उन्हे थापने पीछे चली गई।

× × ×

जगिया इस समय स्कूल मे है। शनिवार है आज। दोपहर के बाद, गुरुजी सारे बालको को मदान मे ले गए। बोले, "बच्चो, अपने पास पिछल दा साल का इनाम पडा है रे, कुछ मै कल और ले आऊँगा। परसो सोमवार को, सरपच से तुम लोगो को बटा बटकर पाप काट। आज तुम्हे कुछ खेल करवादू ?

' सब जानक बडे खुश हुए और एक साथ बोले, "हाँ गुरुजी" एक लडका वाला, "कुछ मिठाई भी मिलेगी गुरुजी ?"

' यह कौन है रे मिठाईवाला ?"

एक छारे न कहा, "मोहनिया है गुरुजी।"

"क्यो रे मोहनिया, तेरे को मिठाई ज्यादा भाती है, बता कितने कीतो लडडू लाएगा, "बोल ?"

सारे बच्चे हस पडे पर वह नहीं बोला।

'मगर मोहनिया, तुम्हारे कई साथी ऐसे भी है जिन्हे भरपेट रोटी भी नसीब नही होती, भूख निकालते हैं आधी, और तुम्हे मिठाई भाती है।"

सब लडके चुप, गुरुजी की ओर देखने लगे।

"बताओ ऐसी हालत मे तुम मिठाई खाओगे, "बाल मोहनिया ?"

"नही गुरुजी," वह बाला।

" 'शाबास,' तुम सोचना जानते हा—अपने साथियो के

लिए।" वे एक मिनट रुके, फिर बोले, "ऐसा रे, मिठाई का नाम सुनकर सबके मुँह मे पानी आता है, मेरे भी आता है—आधा कीलो अभी साफ कर दूँ" सारे बालक हँस पड़े।

'हाँ तो तुम घबराओ मत, उसका इन्तजाम भी करेंगे और नही तो दो दो लड्डू और थोडी भुजिया जरूर मिलेगी। क्यो ठीक है।'

"हाँ गुरुजी," सबकी आवाज एक निकली और सबके चेहरो पर रौनक फिर से नाचने लगी।

पहले, तीसरी से पाँचवी तक के लडके दौड लिए। अब पहली दूसरी की बारी है। सारे बालक एक कतार मे खडे हो गए। सामने दूर, दो झडिया गडी हुई दीख रही थी। गुरुजी बोले, "मैं एक, दो, तीन कहूँगा, तीन कहते ही तुम सब दौड पडोगे। झडी जो पहले उठाएगा वह फर्स्ट और उसके बाद वाला सैकिड। अच्छा, अब सावधान।"

सब लडके तयार हो गए। एक, दो, तीन, कहते ही, चौबीस बालकों की एक पूरी कतार दौड पडी। सबसे आगे जगिया पहुँचा। 'शाबाश', दौडकर, गुरुजी ने उसे ऊपर उठा लिया।

इसके बाद 'बोरी रेस' हुई। इसमे पहली से पाचवी तक के कुल सात बालक भाग ले रहे थे। जगिया भी उनमे था। दो लडके पाच सात कदम चलकर ही गिर गए। मुह उनके रेत मे हो गए। सारे छोरे खिलखिलाकर हँस पडे। दो और रह गए आधी दूर जाकर। जगिया बोरी के भीतर परो को चलाता बडी सावधानी और विश्वास के साथ भाग रहा था तीतर की तरह। पहली दूसरी के उसके सारे साथी कह रहे थे, "शाबास जगिया, जगिया आया फर्स्ट, हा जगिया, मार लिया मोर्चा, दो ही कदम है अब तो," और इतने मे उसकी बराबरी करने वाला एक लडका धम्म से गिरा। सारे लडके हँस पडे, 'बोईजा' से

मैदान गूज उठा। जगिया ने न इधर देखा, न उधर, उसे तो केवल झडी दीख रही थी सामने अर्जुन की चिडिया के सिर की तरह। अपने एक मात्र विरोधी को, तीन फीट पीछे छोडकर झडी उसने उठाली। उसके सारे साथी उछल पड। अबकी गुरुजी ने बोरी सहित उसे कन्धे पर बठा लिया। गुरुजी के कन्ध पर बैठे जगिया ने अपने साथियो की ओर बडे गव से देखा। उसकी प्रसन्नता सिंहासन पर बठे किसी भी सम्राट् से ज्यादा थी— गौरीशकर पर चढे तेनसिंह और हिलेरी से भी ज्यादा। गुरु के कन्धे पर, भला क्या तुलना है उसकी किसी से ?
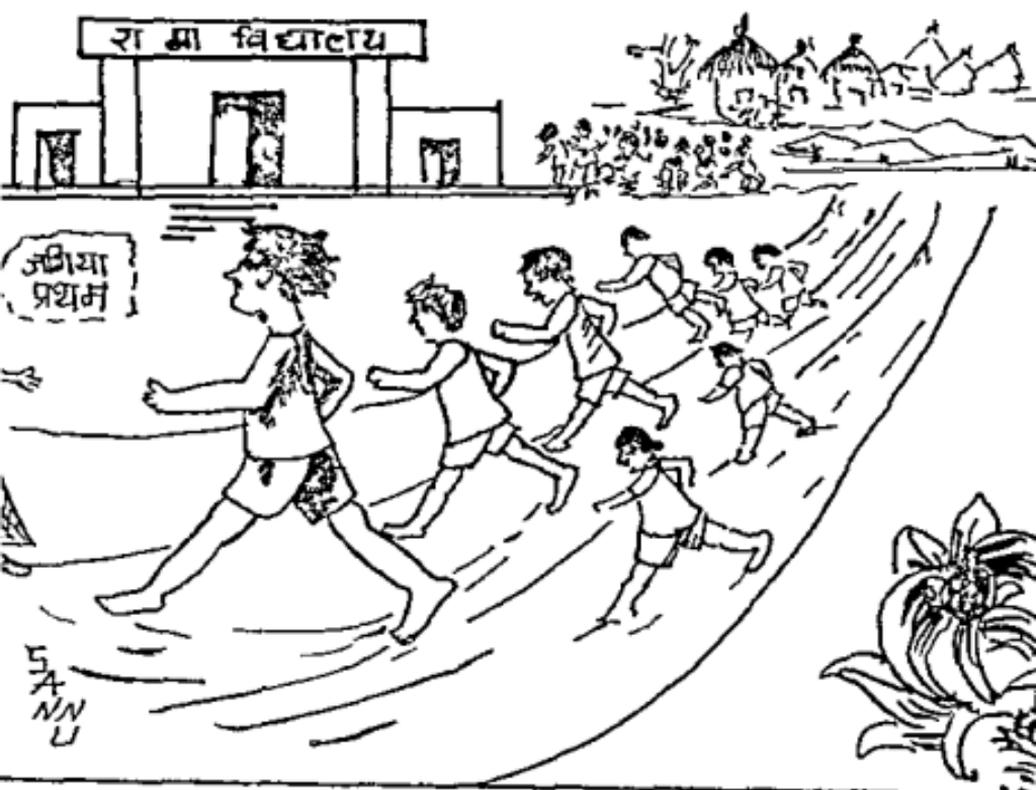
सारे बालक गुरुजी के सामने मैदान मे बैठे थे। उन्होंने कहा, 'देखो, तुम्हारा यह छोटा साथी, पैरो की दौड मे हो नही, पढाई की दौड म भी बडा तेज है रे। महीने भर म इसने दूसरी पोथी पढनी है। बीस तक पहाड, जोड बाकी और गुणा। जुलाई मे इसका नाम इसकी योग्यता का देखकर लिखेगे। जगिया एक दफा अपनी जगह पर खडा हो तो ?"

कहते ही वह खडा हो गया अपनी जगह पर। सारे बालको की नजर उस पर थी और उसकी नजर बालको पर।

उजले बडे और उजले कछिये म वह खडा है। मुस्कराते होठो के नीचे चमकते, छोटे और चावल से महीन दात यदाकदा सबको दीखजाते है। कल गुरुजी ने उसे जरा सा साबुन का टुकडा दिया था। स्कूल मे उसने कपडे धोलिए। गुरुजी के यहा वह थेपडियो का खारिया (झाडा), अपने घर स लाया था।

गुरुजी ने कहा, "परसो तुम्हे अगली पोथी, दो कापिया और एक पैन्सिल मिलेगे, ठीक है ?"

"ठीक है, उसने धीमे से कहा और फिर लडको की ओर देखकर मुस्करा दिया। घोषणा के साथ, सारे बालको ने तालिया बजाई। वह बैठने लगा तो गुरुजी ने फिर कहा, "बैठ मत, और सुन जगिया, एक हाफ्पट और एक गजी तुम्ह और मिलेंगे, तुमने एक नीम लगाया है स्कूल म—इसलिए। क्यो बच्चो, ठीक है न ?"

सबकी मिली हुई आवाज एक साथ गूजी, "हा गुरुजी।"

"तो बजाओ इस बात पर फिर ताली," और तालियो की गडगडाहट से मदान का आकाश गूज उठा।

× × ×

सोमवार को पाठशाला लगी। इनाम बटे। सभी लडके आए लेकिन जगिया नही। उसके इनाम दो महीने तक उसकी वाट

दखते रह। एक दिन वह आया, थका मादा और बुझा बुझा सा। कहते है वह एक भेडिये की माद म चला गया था। कोई ले गया उसे, तो भी चला गया ही समझो। महीना भर उसम रहा वह, मरा ता नही लेकिन हो ऐसा गया था जैसे हररोज उसका खून किसी ने पोछा हा। भय और बीमारी ने उसे दबा लिया, लेकिन जीवन के प्रति उसकी आस्था अटूट थी। महीन भर जूझ कर, फिर उसने वही पहले सा जीवन पा लिया इसकी भी एक कहानी है—वडी करुण। हम अगले पन्ना मे खाजेगे उसे कही।

४

उस दिन साढ़ चार बज थे, जगिया घर पहुँचा। पाटी' और पोथी रखकर, मीधा माँ ही के पास जाने वाला था कि मा ने अवाज दी, 'जगिया ?'

'हाँ मा' के साथ ही वह, मा के पास जा पहुँचा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता खेल रही थी। मा ओखली के पास बाजरी खोटने के लिए बैठी थी। मूसल ओखली के पास, एक किनारे रखा था। उसकी कोहनी दाहिनी साथल पर और ठाडी उसकी तजनी और अगूठे के बीच मे थी। दम फूल रहा था। आज तबीयत वसे ही उसकी ठीक नही थी। शरीर भारी है, नाक म पानी पडता है, आँखे जल रही है, पानी लग गया है और आज वह चिन्तित भी कुछ ज्यादा है, घर मे नाज नही है इसलिए। दो लप मोठ की दाल और कीलो करीब बाजरी ही है घर मे। कल चराई के पसे इकट्ठे करके अनाज मँगाएगी। कल सुबह के लिए, आधा कीलो बाजरी की घूघरी से ही काम चलाना होगा। शाम तक किसी तरह अनाज आ ही जाएगा तो फिर पटडी ठीक म बठ जाएगी।

आते ही जगिया बोला, "मैं आज फस्ट आया हूँ दौड मे, परसो मुझ इनाम मिलेगा," और एक मुस्कान भरा गव उसके चेहरे पर नाच उठा। दौड मे फस्ट-सेकिड का विशेष मतलब वह नही जानती। उसे इतना ही मालूम है कि खेलकूद का फस्ट-सकिड छोरो को राजी करने की बातें होती है, रोज ही तो

खेलते कूदते है ये। जगिया न सोचा था, 'माँ खुश होगी, शाबासी देगी और लाड करेगी, लेकिन मा उसकी आशा के विपरीत बोली, इनाम मिलेगा तो हाथी घोडा मिलेगा क्या ?' और जगिया मा की ओर उदास सा देखने लगा एकटक।

वेटा पेट दौड से नही भरेगा, पेट तो भरेगा खीचडे मे," मा ने कहा।

"तो भर लूगा खीचडे से माँ।"

"सोचता है इतना सरल नही है भरना, भर लेगा तो पहले यह बाजरी कूट खीचडा खेल कूद से नही पकता, देखता नही तू मेरा तो दम उठता ह। रू-रू फटता है, जी करता है ओढकर सो जाऊँ।"

उसने कुछ नही सोचा, मा से मूसल लिया और लगातार घमाधम बीस-पच्चीस चोटें मारदी। वह बोली, बस बेटा खोडी (खीचडे लायक कूटी बाजरी) होगई। झोपडे मे जा, चूल्हे के पास दाल रखी है, बाटके मे ल आ उसे, हटडी मे से आधा मुट्ठी नमक भी ले आ।" हारे मे हाडी पहले से ही रखी हुई थी। पानी उबल गया था। दाल बाजरी और नमक तीनों मिलाकर उसने हाडी मे डाल दिए। बोला, "माँ अब थोडी देर चला जाऊँ ?"

"कहा जाएगा ?"

"कबड्डी खेलने।"

"घडी डेढ घडी मे आजाएगा ?"

"आजाऊँगा।"

"तो जा," और वह भाग गया।

वह उठी और आँगन मे पडी खटिया पर लेट गई। आधे घटे तक पडी रही। जी कर रहा था, पडी ही रहूँ। फिर अपने आप ही बोल उठी पडी-पडी, 'ले भई जीव ' उठ, पडा कब तक रहेगा, और उठ खडी हुई वह। हांडी सभाली। पास मे पडी

डोई फेरी उसमे। शरीर टूट रहा था। वापिस खटिया पर पडने वाली ही थी कि उसे सुनाई पडा, "अरे, जगिया की मा, घर मे हा?" आवाज मनोहरदास की थी। वह खटिया पर ज्याही बैठी, उससे अधिक फुर्ती से वह उठ खडी हुई। बोली, "आवा गुरुजी, पधारो।"

गुरूजी आगन मे आ गए और बिना कह ही खटिया पर बैठ गए। बोले, "अरे पधारना क्या है, एक कोई मेहमान आ गए है, चाय के लिए आधा गिलास दूध मिलेगा कि नही ?" काच का गिलास उनके हाथ मे था।

"सिरफ दस मिट ठह्‌रो आप, मघिया आ ही रहा होगा बकरियाँ लेकर।"

"अच्छा।" मिलसिला चालू रखते हुए उन्होने कहा, "मघिया का हाथ माथा कभी दुखने लग जाय, तब तो बडी मुश्किल हो जाती होगी तुम्हारे।

"मुश्किल क्या अन्न का दरसन ही दुलभ हो जाय, एक दो दफा हुआ है ऐसा गुरुजी, तो चार रुपए देकर किसी छोरे को भेजा है उसकी जगह।"

अरे राम राम, फिर तो क्या बचना है, भगवान् नही करे ऐसा, थोडा रुककर फिर बोले, "होगा बारह-तेरह वप का तो ?"

"जगिया से दो वर्ष बडा है।"

"फिर ठीक ही है मेरा अन्दाज, ग्यारह का हुआ समझो। तब इसके भी दिन तो, पढने लिखने के ही समझो।"

"पढने लिखने के तो आप जानो, खाने खेलने के जरूर ह। जाते समय दो रोटी बाजरी की, और एक केतली पानी, बस। टुकडा-टुकडा करके गिट लेता है, किसी खेजडी के नीचे बैठ-कर—पानी के सहारे।

"हाँ भई, पेट तो किसी तरह भरना ही पडता है, क्या उपाय ?"

वह झोपडे के पीछे गई। बाड पर से इधर-उधर झाकी, उसे बकरियो के खुरो से उठती हुई खेह दिखाई पडी। वह आगई। बोली—

"गुरुजी अब तो आ गई ही समझो बकरियाँ।"

"बहुत अच्छा, काम बन गया फिर तो ?"

वह झोपडे मे गई। पातल को एक तपेली (पतोली) लेकर आई। गुरूजी उठ खडे हुए। वह बोली, "बैठो आप, बस दो ही मिट लगेगे अब तो।"

इतने मे मधिया आ गया। क धे से लटकती केतली और हाथ म कुल्हाडी। सिर पर लोख की भारी, उसे झोपडे के आगे डाल दिया। बकरिया आगन मे होती हुई, पीछे चली गई। वह बोली, "ले यह तपली, पहले गुरूजी को एक बकरी निवोदे।"

पाँच मिनट ही नही लगे। वह तपेली ले आई। गुरुजी का गिलास भर दिया।

"अरे भई, इतने का क्या करूँगा, आधा गिलास ही चाहिए मुझे तो, मैं खुद तो पीता नही, केवल एक आदमी के लिए बनानी है मुझे तो।"

"तो क्या हुआ, पाव भर का तो गिलास है उसमे भी आधा, कुछ इसमे झाग है, क्या हागा छटाक दूध से, लेजावो आप।"

"अरे भई, बिना जरूरत क्यो ?"

"आप सकोच करते है गुरूजी, एक चाय बने जितना ही दूध है यह।"

वह नही मानी और पूरा गिलास हाथ मे थमा दिया। वे निकालकर, बीस पसे देने लगे। वह बोली,"पाव भर दूध के पैसे आपसे लेकर कहा रखूगी गुरूजी मैं। घाटा तो मण (मन) का

ह कण (कन) का नही।"

"इसमे हज क्या है ?"

"और न लू तो हज क्या है, और बकरिया चूध जाता अभी तो।"

"अच्छा, तुम्हारी मौज," इससे आगे वे नही बाले, और चल दिए चुपचाप।

दस बीस कदम चले तो उनको याद आया, अरे जगिया की माँ को बताया नही, कि आज तुम्हारा जगिया फस्ट आया खेल-कूद मे, सोमवार को उसे इनाम मिलेंगे। चलो, कहना क्या है, इनाम खुद ही बोल उठगे, जब वह उन्हे देखेगी तो। मैं क्या, बच्चो ने बधाई पहले ही बाँट दी होगी।

५

जगिया आ गया खेल कूदकर, और आगई तेजी से डग भरती बेरहम सध्या भी। दोनो भाइयो ने दूध खीचडा खा लिया। जगिया ने बतन साफ किए, और मघिया ने बकरियो को कोठे मे डाल, वाड लगा दी। जानकी ने कुछ नही खाया, न उसे भूख थी और न रुचि। उसे हडकम्प थी। कमर फट रही थी। बुखार था। इच्छा थी, 'कुछ चाय लू' लेकिन घर मे न चीनी था और न चाय ही। उसने सोचा, 'रात भर की तो वात ही है, निकाल दूगी किसी तरह। सुबह चाय चीनी का कोई जुगाड करूँगी। वह अपनी खटिया पर लेटी थी। गूदड मे पडी-पडी ही बोली, "जगिया एक गूदड मेरे पर और डाल दे। किवाड खुला मत छोड देना। खीचडे की हाडी ढककर रखदी है ना?"

"हा, माँ, रखदी," जगिया बोला, और दोनो भाई दुबक गए अपने गूदड मे।

रात के दस बज गए। आसपास सब सोगए। हड्डियो को कपाने वाली ठडी हवा की साय-साय के सिवा कुछ भी सुनाई नही पड रहा था। यहाँ तक कि कुत्तो की आवाज भी कानो तक नही आती थी, वे दुबके पडे होगे कही, लेकिन जगिया की माँ अपने गूदडो मे अब भी कापती हुई अ-अ करती बेचैन थी। मघिया दिन भर का थका था, पडते ही नीद फिर गई उसे। जगिया जरूरत से ज्यादा खेला कूदा, मूसल से ओखली मे चोटे

मारी, उसका तो पूछो ही मत, कान के पास ढोल बजाओ तो ही नही जागे।

कुछ देर तो माँ सोचती रही, छोरो को नही जगाऊँ, निकाल दूगी रात किसी तरह से, पार पडती लगी नही। आध पौन घटे बाद, उसने जगाया दोनो को ही। कापती आवाज मे बोली, "बेटा, आक की रेत लाकर गम करो, बिछाऊँ तो शायद पसीना आए और शरीर कुछ हलका हो जाय—सारा शरीर चिररहा है।"

जगिया उठा आख मसलता। बाहर आया। हवा बडी तेज। उसने कमिया और कडाही लिए। घर के पीछे आक है। इतना तो सुख है कि इस ठड मे साप बिच्छू का भय नही। मघिया चूल्हा जलाने के लिए, छाणो का कूडा भरने बाहर आ गया। जगिया से बोला, "डरेगा तो नही, कहे तो चलू साथ मे?"

"नही नही, अभी लाता हूँ, तू जला चूल्हा वह बोला। रात चाँदनी थी। आक की जड से आधी कडाही रेत ले ली उसने। दाहिनी तर्जनी के बाड का काई काटा लग गया। खून निकल आया। अगुली को रगड ली सिर म और आ गया झापडे म। रेत गम करके गुदडी पर फैलादी। उस पर अपनी ओढनी डालकर जानकी सोगई उस पर। ऊपर दो गूदड और नीचे गर्म रेत। घडी भर से पहले ही पसीना छूट गया। शरीर एक बार काफी हलका हो गया। कमर रहगई। मघिया सोगया, लकिन जगिया नही। कई बार मा की कमर दुखती है तो वह उस पर खडा होकर, पैरो से धीरे-धीरे दवाता है। वह उठा, बोला, "माँ कमर पर खडा होऊँ?"

'सोया नही तू अभी?"

"सो जाऊँगा।"

"तो चल, धीमे धीमे थोडा," और वह झट खडा हो गया कमर पर। चलने लगा आहिस्ता-आहिस्ता। उसका पैर जहाँ भी टिकता, वह कहती, 'हाँ यहाँ, बस जी निकलता है, 'हाँ यहाँ' और जगिया अपने सधे हुए पैरो से इधर-उधर चलता। बडा आराम मिला उसे। उसके मुँह से निकलता, जी बेटा, जी सौ बरस तक, घी मे चूर, दही मे जीम तू, तेरी औलाद का खेडा (गाँव) बसे।' जगिया को न इसका कोई लालच था और न इसकी कोई गहरी समझ। माँ अपने सहज भाव मे कहती थी और बेटा अपने सहज अभ्यास मे कमर पर फिरता था। दो चार मिनट बाद वह बोली, "अब काफी ठीक है रे, जा सो तू।"

"*तुम्हारे साथ ही सोजाऊँ मा, कमर दुखे तो फिर जगा लेना।*"

मा के साथ सो गया वह अभय होकर। हृदय से हृदय चिपक गया तो माँ की आँखें भी लग गईं। पर दो घटे ही सुख से सोले, ऐसा उनके भाग्य मे कहा? डेढ घटा मुश्किल से हुआ होगा सोए, झोपडे के अ धेरे को भेदती एक आवाज आई, "जगिया, मघिया ओ मघिया।" जानकी की नीद टूट गई। वह चौकन्नी तो हो गई पर आवाज वह नही पहचान सकी। आधा मिनट ही नही हुआ होगा, आवाज फिर हुई, "जगिया, ओ मघिया किवाड खोलो रे। आवाज अबकी किवाड के पास से आई। वह उठी, बोली, "कौन है?"

"मैं तो कल्लू कुम्हार हूँ, कल्लू हूँ भाई।"

'हा, आवाज तो उसी की है,'सोचा इतनी रात को क्यो आया है। वह रामपुर बस अड्डे पर एक होटल मे रहता है कई साल से। गाव कभो कभार आता है। अकेला हे। सात आठ साल पहले औरत चल बसी। बालबच्चा कोई नही। भाई का परिवार है। उसकी मदद कर देता है। सरल और नेक आदमी है। घर

के पास से गुजरता कई दफा जानकी से रामरमी कर लेता है।

उसने किवाड खोल दिए। बाहर आ गई आँगन मे। वह बोला, "बाई, बाखल (घर के आगे की खुली जमीन) म बल-गाडा है—सुजानसिंह है उस पर, बेहोश और ठिठुरा हुआ। बसें सारी निकल गई। चबूतरे के परली तरफ मुझे कोई गठडीसी दीखी। मैंने सोचा, कोई मुसाफिर बिचारा भूल गया होगा। गया तो, अरे सुजानसिंह यह तो। उठाने की कोशिश की, उठना तो दूर जबान ही नही खोली—बहुत आवाज लगाई मैने। कही ज्यादा पी लिया है इसने, अकड गया है। पहले एक दो उल्टी भी हुई है, कपडो से मालूम पडता है। मकान के भीतर गूदडो मे भी सरदी लगती है बाई, यह तो बाहर पडा था चौगान मे, और यह तीखी हवा तीर की तरह मार करने वाली, देखतो नही, कितने-कितने कपडे पहन रखे है हमने। मैं वहाँ बडी दुविधा मे फँसा रहा बाई, होटल वाले से कहा, उसने साफ जवाब दे दिया 'मैं अपने यहा नही आने दू, कल को कुछ हो जाय तो मैं ब-ध जाऊँ' खडा रहा कुछ देर वही। तकदीर से करीम का गाडा आता दीख गया। उसको दो रुपये देकर, यहा तक बडी मुश्किल से हाथाजोडी करके लाया हूँ। खैर बाई, जो हुआ अच्छा हुआ भगवान ने बडी किरपा की, यहाँ तक आने का साधन जुटा दिया। हजार हाथ है हरि के।"

नीन्द गई भाड मे, एक नई चिन्ता और आगई साथ मे दो रुपए का बोझ लेकर। बोली, "दादा, आप नहीं देखते तो पता नहीं," वह आगे न बोल सकी।

"देखने वाला कोई और ही है बाई, मेरी आंखो से देखना चाहता था वह, देख लिया उसने यहा तक लाने की पटडी बैठनी थी, बैठादी उसने।"

वह बाखल मे आई। कल्लू और करीम ने हाथ पैर पकडकर

ठीक किया सुजान को। करीम ने किसी तरह गोदी लिया उसे। किसी तरह लाकर झोपड मे डाला उसे। सारे शरीर से बदबू आ रही थी शराब की। वे झोपडे से बाहर निकले तो जानकी आँगन मे खडी होगई हाथ जोडकर बोली, "दादा बडा उपगार किया आपने मेरा, सुहाग दान ही दिया है, समझो, दो रुपए मे कल दे दूगी आपको।"

"करना कराना भगवान का है बाई, छोडो, और रुपए पैसे कही भागकर जाते नही देते लेते रहेगे। अब तो एक काम करो तुम, थोडा-थोडा उसे सेको और पगथलियो मे तेल लगावो गरम करके, घबराने की कोई बात नही है।"

"ठीक है।"

वे चल गए।

दो ढाई बजे थे रात के। आकाश मे यदाकदा हलके-पतले कसवाड (झीने बादल) तैर जाते थे। हवा वही ठडी और तीखी। जानकी ने किवाड ब द कर लिए। अन्धकार इतना गहरा हो गया कि कुछ भी दिखाई न पडे। किवाड उसने वापिस खोल दिया। चिमनी है पर किरासीन की शीशी खाली हुए सप्ताह बीत गए। उसे याद आया दो टीपली मूगफली का तेल रखा है मौके वे मौके किसी वटाउ की आवभगत के लिए। सोचा, इस समय इससे बडा वटाउ और कौन होगा मेरे लिए। एक टीपली तेल उसने दिए क पेट मे डाला, दिया जलगया और झोपडे का ससार उसकी आँखो के आगे रूपवन्त हो उठा। उसने सुजान का चेहरा देखा। छाती और पेट पर हाथ फेरा। कमीज कडा था, उल्टी की वजह से। साथलो के ऊपर की धोती भी कडी और सलभरी थी। मुँह से शराब की दुगन्ध और कपडो से सूखी हुई खट्टी उल्टी की। सोचने लगी 'कितनी बार कहा है, समझाकर, गिड-

गिडाकर और आठ आठ आसू पटक कर, पर इसके कान पर जू ही नही रेंगती । मैं भूख निकालती हूँ अधनगे, अधभूखे उदास-उदास बच्चे इसकी आँखो के आगे से घूमते हैं पर यह देखता ही नही । दूसरे ही क्षण उसने सोचा 'ठीक ही तो नही देखना, देखने का स्थान ही इसका अन्धा होगया होगा, फिर दोष क्यो दू इसे । मेरी तकदीर ही ऐसी है बच्चो की दशा ऐसी ही होनी है ।'

उसने ठुड्डी को थोडा हिलाकर कहा, 'सुना तो सुनते नही हो, पर उसके होठ तिल भर भी नही हिले । ललाट पर हाथ फेरते हुए फिर कहा उसने, 'आख मेरी तरफ करो तो ।' वह गुम सुम वसे हा पडा रहा । डरी वह । हे भगवान, कुछ हो गया ता, मेरी आफत का कोई ठिकाना नही । न दो हाथ कफन घर म, और न लाने के लिए राती पाई (एक भो पसा) पास मे । बच्चे हो जायेगे चिथड चुगने लायक और मैं हो जाऊँगी पागल, भगवान, लाज तेरे हाथ है । पीता है पर ऐसी बुरी हालत उसने कभी नही देखी ।

जगिया को उठाया उसने । आवाज के साथ ही वह उठ खडा हुआ । 'कमर पर फिर खडा हाना हो तो उठा लेना' यह उसके सोए मन मे जागता था । मा ने कहा 'चूल्हा जला बेटा ।' उसन धुधले प्रकाश मे आखो का मसलते हुए इधर उधर दखा । वह कुछ पूछे उससे पहले ही मा ने कह दिया 'पी-पा कर आया है तेरा बाप बेहोश है खोरे कर, कुछ सेक ।

उसने चूल्हा जलाया । चूल्हे मे घटा सवा घटे पहले के छाणे ओट थे । फूकें देकर तयार किया चल्हा उसने । तेल एक मिरकली बचा हुआ था डिब्बे मे । पाछ पाछकर जानकी ने एक कटोरी मे डाल लिया । गम किया । जगिया तलवे मसलता रहा । हथेलियो ललाट और कनपटियो पर वह मलती रही एक कपडा गर्म कर, कमर भी सेकती रही वह । घटे सवा घटे बाद उसकी

अकड भी खुली और आखें भी। वह धीमे से, कुछ लडखडाती आवाज मे बोला, "यहा कसे आ गया मै ?" जानकी का जी मे जी आया। वह बोली, "यह देखने के लिए कि हम जीते हैं या मर गए।"

"कौन लाया मुझे ?"

"मै लाई हूँ।"

"मै तो बस अडडे पर था।"

"म लाई हूँ, वहाँ से में, इसलिए कि मरने से पहले इस भरे झोपडे को तुम अपने हाथो से दियासलाई लगादो और फिर मस्ती से पियो कोई नही टोकेगा। जगिया, ला बेटा दियासलाई दे तेरे बाप को।"

वह लज्जा से गडगया—और आत्मग्लानि से भरगया। उसने आखें ब द करली। शरीर मे ताकत नही। चक्कर और दिमागी सून अब भी उसको रह रह अनुभव होते है।

जगिया ने सचमुच दियासलाई लाकर पटक दी माँ के आगे। जानकी बोली, "उठो, किवाड ब द करदो झोपडे का। मैं रात दिन रोती रोती ऊब गई हूँ, मेरे से अब रोया नही जाता। मेरी कसम है तुम्हे, मघिया और इस छोरे की कसम है, उठकर इतनी मेहरबानी करो—आग लगादो इस झोपडे के। रोज रोज के घुएँ से, एक दिन खुलकर जलना अच्छा।"

उसने आख खोली, एक बार जानकी की ओर देखा फिर उदास जगिया मघिया को। मघिया भी उठ गया था इस समय। उसका रोम-रोम पीडा से भर गया। वह बोल नही सका, घिग्घी बन्ध गई उसके और आखे वह उठी। उसने आख तो बन्द कर ली, पर आसू बन्द नही हुए। जगिया उसकी ईस (खाट की लम्बी भुजा) के पास ही खडा था उसके चेहरे का भोला राग उसकी आखो मे—उसके हृदय मे समा गया। उसके कापते हाथ

ऊपर को उठे। बाहुओं में भर लिया उसने जगिया को और अध पागल की तरह सीने पर डाल लिया। आसू घने हो गए। जगिया रोने लगा। मघिया और उनकी माँ भी। आसुओं के इस व्यौपार ने सुजान का मैल धोदिया हमेशा के लिए। जगिया हट गया।

सुजान बोला, "जानकी मुझे कम दिखता है, रोशनी बुझ रही है। अब जिस दिन पीऊँगा अधा हो जाऊँगा, परसो घासी राम का लडका डॉक्टर है, मेरी आख देखकर वह बोला—"सुजान अब तुम जब भी पीओगे तो आख खो बैठोगे।" उसका सारा शरीर कापने लगा। वह रुक गया कुछ फिर बोला, अगर मै अधा होगया तो क्या हाल होगा मेरा। मैं अब नहीं पीऊँगा, नही पीऊँगा, और फिर वह मौन होगया, और आँखें बन्द करली। बन्द आखें किए ही बडबडाया वह, बहुत मारी नजर तो खोबैठा, अन्धा होजाऊँगा तो, अब नही पीऊँगा।"

सूरज उगा। मघिया बासी खीचडा और थोडी गूघरी खाकर, बकरिया के पीछे चला गया। जानकी और जगिया चराई उगराने के लिए निकल पडे। माँ बेटा, बडी मुश्किल से तेरह रुपए करके लाए। किसी ने कहा कल, किसी ने कहा दो दिन ठहरो, कोई बोला, एक तो ले जाओ अभी, दो फिर ले लेना। चन्दा और चराई मनारा को भारी साधनी है। वह स्वत ही बोली, "उगराई का कल फिर जाना होगा, पर यह रोज कुआ खोदना और रोज पानी पीना कब तक चलेगा ?

दस बजते ही चौधरानी आ धमकी। ग्यारह रुपए वह लेगई। दो रुपए का उसने कलचक्की से आटा मँगवा लिया। फिर उसे ध्यान आया, 'अरे कल्लू दादा भी तो आने वाला है। उसे दो रुपए तो देने ही चाहिए। वह उदास होगई। सोचा चराई अभी बाकी है, हाथ जोडकर कल का कह दगी। मान जाएगा वह।

पडास से थोडी चाय की पत्तिया ले आई वह। पत्तियाँ डालकर दूध दे दिया उसने सुजान को। वह लेटा रहा। रोटिया वनाई। जगिया का कुछ खिलाया पिलाया। दो रोटिया एक गलने मे बाधी, बोली, "जगिया, जा बेटा, ये भाई को दे आ, नही तो भूखा रहेगा दिन भर। आना जल्दी, बेटा!" जगिया के पैर जगल की ओर चल पडे।

एक बजा होगा। कल्लू दादा आ गया, बोला, "क्या हाल है बाई उनका ?"

"ठीक है दादा, थोडा दूध दिया है, पानी गम चढाया है, कपडे वपडे धोऊँगी, मिललो आप," वह बोली।

वह अन्दर गया। लेट रहा था सुजान। कल्लू बोला, "अरे भई, यह भी कोई पीना हुआ ?"

वह बोला नही, केवल उसकी ओर देखता रहा।

कल्लू ने फिर कहा, 'अरे भले आदमी, प्राण तो जाते से जाएँगे, लेकिन आँखे जल्दी ही चली जाएँगी, और फिर सडना कौने मे कही, न कोई पूछेगा और न कुछ दीखेगा। इस घर फूक तमाशे मे क्या निकालते हो ?"

अबकी बार उसके होठ भी कुछ हिले, बोला, "हाँ दादा, ठीक कहते हो आप, मुझे आपका चेहरा धुंधला-धुंधला दिखाई देता है अभी, दादा अब मैं नही पीऊँगा।"

'अच्छी बात है, नही पीओगे तो, तुम भी जी लोगे कुछ दिन और तुम्हारे बच्चे भी। सुजान कभी आँखें खोलता, कभी बन्द करना जैसे उसको न बोलना अच्छा लगता हो और न सुनना। कुछ उन्माद अब भी उसके चेहरे पर चक्कर काट रहा था। कल्लू बाहर आ गया।

जानकी बोली, "दादा, दो रुपए आपको देने ह, कल दे दगी।"

"दे देना बाई कभी, ऐसा कोनसा वारट है तुम पर ?"

"समझे काई, तो वारट मे ज्यादा है, आपने किस मौके पर निकाल कर दिये है, अपनी जेब स, पर करूँ क्या, आपके सामने क्यो छुपाऊँ, दो लाती हूँ, चार का खच तयार रहता है।"

"म तो बाई, लखदाद तुम्हे इस बात का देता हूँ कि तुम यह गाडी खीचती कसे हो ?"

"क्या खीचना है दादा, मौत और जीवन के बीच कभी दो कदम मौत की तरफ और कभो एक कदम जीवन की तरफ— यो यो करते करते मौत के पास जा लगी हूँ।"

उसने जानकी पर सहानुभूति की नजर डालते हुए कहा, "एक बात है बाई, तुम्हारे सौ जचे तो मानना, नही तो टाल सही, कहो तो कहूँ ?"

"जचेगी क्यो नही, कहो दादा, मैं तो आपकी लडकी के समान हू।"

"कस्बे मे रामू मोदी का होटल है बाई, उसको एक छोरे की जरूरत, है जगिया ठीक रहेगा, मैं समझता हू।"

वह अचम्भे से बोली, "जगिया ठीक है दादा! वह क्या कर लेगा भला ?"

"करना वहा क्या है बाई, गाहक को चाय पकडादी, चाय का पानी चढा दिया, किसी को भुजिया, कचौरी या कोई मीठा दे दिया। तोलेगा सेठ, पैसा लेगा सेठ, उसको क्या करना है, या ज्यादा से ज्यादा बाल्टी मे डुबोकर कोई कप तश्तरी निकाल लिया। ये कोई काम थोडे ही है ?" वह आधा मिनट चुप रहकर फिर बोला, "एक बात और है बाई, सुन, समझले, धीरे-धीरे वह चाय बनानी सीख गया, थोडा कचौरी, भुजिया बनाना आगया उसे, तो लोग महीने के तीन सौ चार सौ लिए पीछे-पीछे डोलेंगे उसके। रोटी अगले की, तेल साबुन अगले के।"

उसने एक बार कल्लू को ओर देखा। उसके चेहरे पर उसे सरलता के साथ साथ आत्मीयता भी दिखाई पडी। बोली, "दादा इससे पार पडना मुश्किल है, कम से कम बारह तेरह साल का छोरा तो होना ही चाहिये, कुछ वजन झल सके।"

"अरे बाई न तो वहा कोई बहीखाता लिखना और न कोई भार उठाना। दो चार रोज मे अपने आप ही रफ्तार पकड लेगा वहाँ की। इतने इतने छोरे तो दसियो देखता हू मै रोज—हवा की तरह इधर से उधर भागते हैं।"

जानकी ने सोचा, आटा तो आज शाम तक मुश्किल से पार पडेगा—दस बीस रुपये पति के पेट मे ही डालने होगे, तब जाकर वह कही घूमने फिरने लायक होगा। मघिया की कमीज बिल्कुल फट गई है। दस पन्द्रह रुपल्ली और आएँगी रोते पीटते, चटनी ही नही होगी उनसे तो। घर मे न मिच मसाले, न गुड तेल, न चाय चीनी और न दो रोज का नाज ही। बात तो बिचारा हित की ही कहता है, इसको कौनसी दलाली खानी है बीच मे। फिर भी एक दुविधा उसके चेहरे पर डेरा डाले हुए थी।

कल्लू बोला, "बाई इतना क्या सोचती हो, यदि तुम्हारे नही जचे तो महीने भर ही सही, बाद मे जचे तो रहना नही तो, अपना घर भला और इस पर भी तुम्हारा मन नही मानता है तो टाल सही।"

वह बोली, "आप बीच मे है तो मेरे को डर किस बात का, पर पहले एक बार महीने भर देखलू ?"

"हा हाँ, इसमे 'सका सरम' की बात ही क्या है ?"

"क्या कुछ दिला दोगे इसे ?"

"फिलहाल तो बाई पचास रुपये समझो तुम, और खाना अगले का है ही। फिर भी दो पाच अपनी ओर से अधिक दिलाने की ही कोशिश करूँगा।"

वह कंठ तक आई हुई थी—अभाव और परेशानी से। मा
इस महीने गाड़ी किसी तरह टीबे को पार कर ले तो फिर जमी
कुछ सीधी दिखाई पड़ती है। कह दिया उसने, "आपके जच ग
तो ठीक है, छोरा भी आजाता है अभी, थोड़ा उसके कानो में
निकाल लू बात ?"

"जरूर निकालो बाई, असली दारोमदार तो उसी पर है
वैसे दस पाच रोज मे घडी दो घडी का समै निकाल कर मैं भ
मिलता रहूगा उससे।"

भाग्य की बात, जगिया आ पहुँचा।

कल्लू बोला, "अरे, ऊमर तो बडी है तुम्हारी, चलेगा कस्बे
की हवा खाने महीना भर मेरे साथ ?"

वह उसकी ओर ताकने लगा, बोला कुछ नहीं।

"अरे भुजिया कचौरी, लड्डू मिलेंगे खाने और पचास रुपये
अलग से।"

फिर भी वह बोला नही, बात उसके कंठ से उतरी नहीं।

मा बोली, "क्यों रे जायेगा कल्लू दादा के साथ, ज्यादा नहीं
तो महीना भर ही सही, बीच बीच मे दादा तेरे से मिलते रहंग,
कोई तकलीफ नही होने देंगे तुम्हे वहाँ, बोल ?"

उसने सहज भाव से कहा, "चला जाऊँगा।"

जानकी ने बीस रुपए, एक बार अगाउ दिलाने को कहा।
कल्लू बोला, "ले बाई, रुपये बीस मैं देता हू।" अपनी अंटी में से
निकाल कर रुपये गिन दिये उसने। जानकी ने दो उनमें से कल्लू
को पकड़ा दिये।

चार साढे चार बजे, जगिया स्कूल की तरफ गया, पर गुरुजी
नहीं थे वहाँ, कस्बे गये हुए थे। वह कुण्ड पर गया। पानी की
बाल्टी निकाली। नीम के पास गया। उसके चारों ओर लगे काँटे
और खीप, किसी ने इधर-उधर कर दिये थे। उसने उनको फिर

से जचाया। दो बाल्टिया डालदी। नीम उदास और अलसाया हुआ था। पत्ते नही थे। बिलान भर का अँगुली की तरह पतला तना मात्र ही था। उसने सोचा, अब यह शायद ही वापिस फूटे। वह उदास घर आगया।

दूसरे दिन सुबह सुबह ही जगिया कल्ल दादा के साथ आढ पहन कस्बे को चल दिया। माँ उस जाते हुये का बाड पर से देख रही थी। स्वभाववश दो बून्दे उसकी आखो से बाहर आईं। और उसके कपोलो पर ही कही ओझल होगईं और ओझल हो गया जगिया भी, कही, पगडडियाँ पार करता।

जगिया इस समय होटल की एक बैंच पर है। उसके पास ही कल्लू बठा है। सुबह के आठ बजे हैं। अभी अभी आए हैं वे। कल्लू किसी से कुछ बात मे लगा है। जगिया चुप बैठा है। सामने सडक है। वह ताँगो मे जूते घोडो की टाप, साइकलो की टनटन, मोटर ट्रकों की पोंपो, उनकी घरघराट और सरसराट से विस्मित हुआ, रह-रह सडक की ओर देख लेता है और कभी होटल की ओर।

होटल के चेहरे पर टगे एक साईनबोड पर बडे बडेअक्षरो मे लिखा है 'आजाद होटल'। कल्लू ने जाते ही अट्ठावन साठ के एक आदमी से, हाथ जोड, जैरामजी की। वह बिना बाजू की एक कुर्सी पर बैठा जरदा लगा रहा था। उसका पट बडा, सिर ऊपर से चिकना और उजाड, पर भीतर से यूरिया दिए, दुआब स भी ज्यादा उपजाऊ, जहा हर रोज नई फसल कटती है। उलझी मूछें, बात करते, यदा कदा कोई बाल उसके होठो मे आ जाता है। रुई का एक मला सा दगला पहने है और घुटनो से चार अगुल नीचे तक एक चोकट धोती। मिठाई बनाओ चाहे कचौरी और समोसे, बीच-बीच मे 'काख और कूल्हे' कुचरना उसका स्वभाव बन गया है। पुरानी एक्जीमा है उसके, और साईनवाड पर लिखा हुआ है, 'शुद्ध मिठाई, स्वादिष्ट नमकीन और ए वन चाय का एक मात्र स्थान'। शरीर भारी, और रग टेलीफोन के सैट सा शुद्ध काला,

दाँत एक भी नही, हाँ जाडे है कुछ। यह होटल का मालिक है रामू मोदी। कल्लू को देखते ही बोला, "आव कल्लू भगत।"

"हाँ आया साब।"

"साथ मे यह कौन है ?"

"पाच सात रोज पहले, आपने जिक्र किया था साब, कि कोई छोरा हो तो लाना।"

"अरे, हा कहा था, सो यह लाया है तू ?"

"हाँ साब।"

"गुरु छोटा दिखता है, खीच लेगा गाडी ?"

"आपको साब आम खाने कि पेड गिनने ? ज्यादा नही तो महीना भर देख लो पहले।"

"हा, यह ठीक कहा तुमने।"

"लेकिन यह मैं बता दू साब, पचास रुपए मे यह महँगा नही है।"

"अरे महँगा सस्ता छोड, तुमने भी तो बरस के बरस होटल मे ही गुजारे हैं, वह तुमसे छिपा थोडा ही है ?"

"साब, अपने मुँह से क्या बडाई करूँ जवान आदमी को परे बिठाता है, दिन भर अकेला रोही मे रहकर, खलहा रखवाली कर लेता है मजाल है कोई कौवा भी दाना ले जाय वहाँ से। इतना पक्का तो पहरेदार है।"

मोदी जगिया की ओर मुडा, बोला, "क्यो बेटे, क्या नाम है तेरा ?"

"जगिया," जगिया ने धीरे से कहा।

"अरे बडा बढिया नाम है तब तो, हमे तो दिन रात जगने वाला 'जगिया' ही चाहिए कोई। सोने वाले का यहाँ क्या काम भइया ? काम करेगा तो ?"

"हा।"

"खूब दौड़-दौड़ कर ?"

"हाँ," कहकर वह मोदी की ओर देखने लगा।

"शाबास, तब तो तुम्हे खूब मिठाई खिलाऊँगा रे, लाड रखूगा तेरा क्यो कल्लू ?

"हा साब।"

'नाम तो बड़ा शुभ है इसका।"

नाम, काम और सभाव, सारा ही शुभ है यह बालक तो भगवान का रूप होता है—साब," कल्लू ने कहा।

"ठीक कहते हो तुम, चेहरे का पानी छिपा थोड़ा ही रहता है।"

उसने आधी मुट्ठी बूदी और कुछ भुजिया, कागज मे डालकर जगिया को दिए। बोला, "ले जगिया, लगा भोग गणेशजी का नाम लेकर।"

जगिया दुविधा म डूबा सा, उसकी ओर देखता रहा।

कल्लू बोला, "ले ले बेटा, मालिक देवे तो शौक से खा, अपने आप या पीठ पीछे एक दाना भी मुह मे डालना बुरा है।"

जगिया फिर भी दबा दबा सा देखता रहा।

कल्लू ने फिर कहा, "अरे साले, शङ्का शरम कर ही मत।"

जगिया ने लेलिए बून्दी, भुजिया। बच पर बैठकर खालिए। कागज दूर डाल आया। पास आकर खड़ा हो गया।

मोदी बोला, "और दूँ ?"

"नही, हाथ धोऊगा।"

"क्या लगा है रे, हाथो के ?"

"जूठे है।"

"शाबास, कल्लू छोरा है तो समझदार, बोरी चावल का अन्दाज आधी मुट्ठी बानगी से ही लग जाता है। देख, वह सामने टूटी रही। तू कल्लू, अब जा भते ही, चाय पानी करना है तो

कर ले।"

"मैं तो साव, अपनी जगह जाकर ही करूँगा," फिर जगिया से बोला, "जगिया जाऊँ अब ?"

"जाओ", जगिया ने धीरे से कहा।

"डरना मत, दो-तीन मे एक दफा और आऊँगा तेरे पास, ठीक है ?"

"ठीक।"

कल्लू हाथ जोडकर मोदी से बोला, "साव बच्चा है, थोडा ख्याल रखना।"

"अरे इसके लिए भी कहना पडता है क्या ? हमारे भी तो बच्चे हैं जाओ तुम।"

कल्लू चला गया।

मोदी उसे दूकान मे लेगया। दो पीपे साफ करवाए। दूकान और बरामदे मे झाड़ू निकलवाया। बचो पर दो तीन गाहक जचे, चाय की चुस्की ले रहे थे। मोदी ने एक चाय उसे भी दी। पीली उसने। फिर बाला, 'देख वह प्लास्टिक की बाल्टी ले आ, उसमे ये कप प्लेट डालकर, टूँटी नीचे धोला।"

जैसा समझाया, जगिया ने कर दिया।

मोदी के दो लडके वहाँ काम करते हैं हरि और जगदीश। हरि चाय बनाने पर है, और जगदीश लेन देन और तोल-जोख पर।

मोदी जगिया को अपने साथ घर लेगया। घर यहाँ से चालीस-पचास कदम के फासले पर ही है। उसे भोजन करवा दिया। अपनी बहू से थोडा परिचय करवा दिया। नहाने धोने की जगह बता दी। फिर बोला, 'देख, दुकान पर कोई गाहक आवाज दे, छोकरे या जगिया, तो कहाकर, 'हा बाबूजी, हुकम करो, लाता हूँ बाबूजो, अभी लाया साव। दुकान से घर, और घर से

दूकान। रोटी खाई और सीधा काम पर। रास्ते में न किसी से बातचीत न किसी छोरे के साथ खेलना, कूदना, समझा ?"

"हा साब।"

"बता क्या कहेगा गाहक को ?"

"हा बाबू जी, हुकम करो, अभी लाता हूँ साब।"

"शाबास बहुत जल्दी ही पकडली बात तुमने।"

काम उसके समझ मे आ गया। उसे आए हुए तीन दिन हो गए। चाय और रोटी उसे समय पर मिल जाती है। कल्लू आया था आज सुबह-सुबह ही, बोला, "क्यो ठीक है जगिया ?"

"धीरे से कहा उसने, ठीक ही है।"

"माँ को कह दूँ, जी लग गया है उसका।"

वह अनमना सा खडा रहा बोला नही, मोदी बोला, 'अरे नही बोलना, आधी हाँ होती है कह देना अच्छी तरह से, जी लग गया है उसका।"

कल्लू बोला, "क्यो ?"

और उसने सिर हिलाकर हाँ कर दी।

कल्लू चलने लगा तो मोदी उसके साथ हो लिया। रास्ते मे बोला उससे, ' कल्लू, ज्यादा लाड-प्यार से टाबर सीखता नही है, महीना बीस दिन एक बार जम कर काम करने दे इस। महीना पूरा हो तब फिर आजाना एक बार।"

"ठीक है साब।" वह चला गया।

जगिया की गाडी अब दिन-दिन तेज दौडती है—घर और दूकान के बीच।

पहले दो दिन उसे खिलाया-पिलाया भी ठीक और उठाया भी छह बजे सुबह।

अब उसे चार साढे चार बजे ही उठा दिया जाता है। दूकान के भीतर मोदी खुद सोता है। जगिया बाहर, दो बेंचें मिलाकर

उन पर।

उठते ही वह, सिगडी की राख निकालता है। कोयले डालकर उसे चालू कर दता है। सारे कप प्लेट धो पूछ कर करीने से रखता है। झाडू निकालता है, नल से बाल्टी-बाल्टी करके दो मटके भरता है। मेजो पर कपडा फेरता है। यह तो है दिन भर के काम की भूमिका। असली काम तो गाहक आने पर शुरू होता है।

गाहक कहता है "मोदी जी, दो चाय कडकडी ?"

फिर आवाज होती है 'जगिया' ?

"हा साव, आया, बाबूजी।"

'पहले बिना कहे ही पानी का गिलास रख दिया करो,' मोदी कहता है।

"ठीक साब, अभी रखता हूँ बाबूजी।"

अब वह हर गाहक के आगे, उसके बिना कहे ही पानी का गिलास रख देता है। रोज के गाहक तो, उसे नाम से ही पुकारते हैं।

आवाज आती है, "जगिया ?"

"हा बाबूजी," बडी मीठी और प्यारी आवाज है उसकी।

"दो चाय कडकडी और समोसे ?"

"अभी लो बाबूजी," पानी के गिलास पहले ही रख दिए उसने।

चाय और समोसे फटाफट रख दिए, पास जाकर धीमे से कहता है, "और कोई हुक्म करो बाबूजी ?"

"कचौरी ताजी है ?"

"अभी अभी घर से लाया हूँ बाबूजी, परात भर कर।"

"तो ला देखें एक-एक।"

"अभी लो बाबजी," और कचौरी फौरन गाहक की प्लेट मे।

खाते ही, कप-प्लेट उठाकर, बाल्टी मे, और मेज पर भट कपडा मार देता है, गाहक कहता है, "मोदीजी छोरा कहाँ से आया है,बडा तेज है।"

"गरीब है विचारा, आ गया है कही से, सीख जाएगा तो दो रोटी कमा खाएगा।"

"नही मोदीजी, छोरा पानी वाला है।"

फिर जगदीश की आवाज आती है, "जगिया क्या-क्या दिया है रे बाबू लोगो को ?"

"साब, दो समोसे, दो कचौरी, और एक-एक कडकडी चाय।"

गाहक हँसते हुए बोला, "अरे कडकडी के पैसे ज्यादा होते हैं क्या ?"

"साब, ज्यादा कमती का मुझे पता नही, आपने ही कहा था चाय दो कडकडी।"

वे फिर हँसने लगे। बोले, "हाँ हा रे तू ठीक कहता है।"

'कई दिन होगए। दिन के बारह बज जाते हैं। रोटी खाने को फुरसत ही नही मिलती। आज भी साढे बारह हो रहे हैं। एक कप चाय और आधा मुट्ठी माटा भुजिया लिया था। जरदे पर अगूठा मारता मोदी बोला, अरे रोटी खाने नही गया अभी ?"

"नही।"

"तो जा जल्दी मे, पाँच मिनट मे खाकर आ। देखता हूँ कितना फुर्ती से आता है ?" परसो दो बजे गया था और फिर एक समय ही खाकर रह गया। दो घटे घर का काम किया, चार बजे छोडा। कल गया ही नही। न फुरसत मिली और न मालिक ने ही कहा। चाय कचौरी और थोडे भुजिया पर ही रहा।

अब ज्या ही वह जाने को हुआ, सरदार हजारा सिंह और उसका खलासी आगए। सरदार ने ट्रक से निकलते ही आवाज

लगाई, 'ए मुडिया किथों भगदा है, चाय नही पिलाएगा ?"

वह जाता-जाता रुकगया, बोला, "पधारो साब, अभी लाता हूँ।"

"ओ ए सुन ?"

'हुकम करो साब ?"

'पेडे हैं ?"

"हैं साब।"

"ला देखें सौ-सौ ग्राम।"

फौरन पेडो की प्लेटें हाजिर।

'अब चाय ले आ, गरम-गरम।"

'भाप निकलती निकलती लो साब।"

सरदार ने बिना देखे ही कहा, 'ओ ए पर्ले पानी दा गिलास तो ले आ।"

"आगे पडी तो है साब गिलास।"

'अरे (अचम्भे से) ए कब लाया ? मैं कहाँ था उस वक्त ?"

"झपकी ले रहे थे साब।"

सरदार हँस पडा। बोला "वडा ध्यान रखदा है मुडिया तू।"

खलासी बोला 'अजी वडा तेज पडदा है मुडा।'

'चल तनु ले चला अमरसर, सैर करावागे ते प्यार नाळ रखागे, चलेगा ?"

"नही साब।"

"चगा, मौज थ्वाडो।"

वे खाकर उठ गये। जगिया जाने को हुआ। साइकलो वाले दो और आगये। एक बोला उनमे से, "जगिया !"

"हुकम करो बाबूजी ?"

"दो गम समोमे और चाय।"

"अभी लाया बाबूजी।"
'पहले पानी ला।'
"सामने रखा है न बाबूजी।"
"अरे बिना कहे ही ?"
"पानी तो बिना कहे ही परोसा जाता है बाबूजी।"
मुस्करा दिये वे। एक बोला, "ठीक कहता है छोरा।"
दूसरे ने कहा, "बड़ा हाजिर जवाब है।"
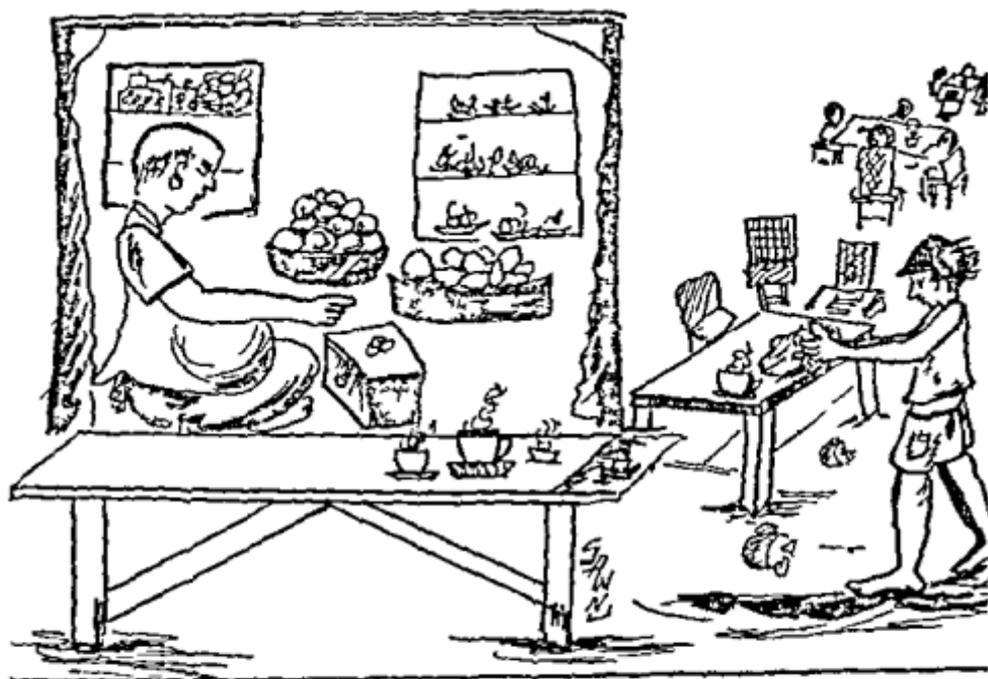
जगिया जाने की सोचता है। आत भीतर से कुलबुला रही है। कप प्लेट बाल्टी मे रखकर टूँटी की तरफ बढ़ा ही था, पीछे से आवाज आई—

"छोकरे एक कप चाय ला देवे गरमागरम।"

बाल्टी उसने एक ओर रख दी। बोला, "अभी लो बाबूजी।" गिलास भरकर रखदी पानी की।"

"अरे पानी कौन पीयेगा इस ठंड मे," गाहक बोला।

"मत पीवो बाबूजी, पानी के पैसे थोड़े ही हैं।"

बरामदे मे खड़ा एक बोला, "यह नही चूकता किसीसे।"

चुस्की लेता सज्जन बोला "सच पूछो तो भाई साब, इस छोरे की प्यारी जबान सुनने के लिये ही ये तीस पैसे खर्च करता हूँ मैं।"

"आप क्या, कई करते है साब। इस छोरे की वजह से मोदीजी का मुनाफा आजकल आगे से डबल हो गया है।"

पास मे ही मोदी खड़ा था, बोला, "आप लोगो की मेहरबानी है साब।"

इस समय बेंच पर कोई नही था। उसने कप प्लेट धोये। ढाई बज गये मोदी बोला, "जा दो मिंट मैं खड़ा होता हूँ यहाँ, तू फुर्ती से आ देखे रोटा खाकर।"

रवाना होगया वह, उदास धीरे-धीरे। मोदी ने पीछे से आवाज लगाई, 'पैर फुर्ती से रख, बीमार की तरह क्या चलता है रे ?'

मालिक का हुक्म था, हुक्म का चाबुक खाकर थोड़ा और तेज हो गया, ज्यादा शक्ति तो बेचारे मे थी नही। घर गया। मोदन बोली, "दूल्हे के से पैर धरता, देरी से आया रे ?"

"होगई देरी," मरा मरा-सा वह बोला।

"जल्दी जल्दी खा, थोड़ा यहा भी तो काम करना है।"

साग क्या, आलू की कपली तो दो तीन ही मुश्किल से होगी, टोपिए का कोरा धोया हुआ पानी था। ऐसे ही कभी दाल होती है, पतीली का पेंदा धुपा, पीला पानी। बेचारा बोलता नही, नाड

(गदन) नीची करके खा लेता है। रूखे, ठडे और चमडायले फुलके। आज ही नही रोज। खावे का मन योहो नहीं था, फिर यह भोजन और इन सबसे ऊपर मालकिन का रूखा व्यवहार, कि जल्दी-जल्दी खा, थोडा यहाँ भी तो काम करना है। फिर भी डेढ फुलका उस पानी मे डुबो-डुबोकर किसी तरह पेट मे डाला उसने। ज्यो ही अपनी थाली कटोरी माजने बैठा मोदन ने चौके मे रखे थाली, टोपिए, पतीली और गिलास, कटोरी करकराकर, कोई डेढ दजन बतन उसके आगे लाकर रख दिये। आज ही नही, भोजन करने जब भी आता है, दस पाँच बतनो के हाथ तो फेरना ही पडता है। बतन माजकर जाने लगा तो मालकिन फिर बोली, "रसाई मे जरा कपडा ता मारदे, अैठ जूठ इतनी बिखरी है कि सारी चिपचिप करती है।"

"अभी लो साब," धीमे से वह बोला।

अधेड मालकिन थाडा गुर्राई, बाली, "अरे मैं साब हूँ?"

उसने अचम्भे से उसकी ओर देखा, बोला तो सावनी बोलूँ, मुझे पता नही।"

"नही, माताजी कहाकर।"

'ठीक है, आईन्दा ऐसा ही कहूँगा।"

चलने लगा ता हरि की बहू ने आवाज दी "जगिया?'

"हा माताजी।"

नई बीनणी' थी, शरमाई हुई उस समय तो कुछ बोली नही, ऊपर ले गई उसे छत पर। ऊपर अपन कोठडीनुमा कमरे के आगे एक कबूतर मर गया था। बाली, "गत्त पर रखकर इसे बाहर फेंक आ, हाथ धुला देती हूँ, और सुन, आगे से मुझे माताजी मत कहना।"

"तो," वह शकित सा उस लिपस्टिक लगी 'बीनणी' की ओर दखने लगा।

"बहूजी, समझा ?"

"समझ गया, बहूजी ।"

कबूतर डाल दिया उसने । हाथ उसके धुला दिये गये । वह होटल मे आ गया वापिस । आते ही मोदी भी थोडा गरजा, "अरे इस तरह से काम होता है कभी ? कब गया था, बाल्टी, कप प्लेट से भर गई है, रास्ते मे कही खलने तो नही लग गया ?"

"नही साव, बतन माजे, चौके मे कपडा लगाया, बहूजी के कमरे से एक कबूतर बाहर फेंककर आया ।"

"अच्छा अच्छा, सम्हाल अपनी सीट अब । पहले तो ये कपो प्लेट साफ करला ।"

"हा लाता हूँ साव ।" जगिया फिर वही कठपुतली और फिर वही नाच ।

रात के ग्यारह तो रोज ही बजते हैं । कई दफा बारह साढे बारह से भी ऊपर निकल जाता है समय । तब मोदी कहता है,

"अरे अब घर क्या जायेगा, चौका लिये कौन बैठा होगा, एक एक नीन्द ली होगी सबने । ले खाले कचौरी, भुजिया ले ले थोडा, चाय है तो ले ले एक कप मे ।" जगिया जो वह थोडा बहुत देता है, खा पीकर सन्तोष कर लेता है ।

आज भी साढे बारह बज रही है । वह थोडा भुजिया और चाय लेकर साफ सफाई मे जुट गया । बडा पतीला, टोप, टोपिया, बाल्टी, जग और अट्टर-पट्टर सब साफ किये, मेजें पोछी, तब तक सवा बज गई । मोदी दो घडी पहले ही दूकान मे चला गया, रोज ही चला जाता है । जगिया बरामदे मे दा बेंच सटाकर अपनी सेज उन पर लगाता है—आज ही नही, रोज ही । सयोग-वश, कभी मोदी नही भी होता है तो भी, जगिया अपनी सेज नही छोडता । बरामदे की बत्ती जलती रहती है । बिछाने को कुछ नही है उसके पास, ओढने को एक चीकट रजाई है । शरीर को

वह जहाँ से छू जाय, वही शरीर चिप चिप, कपडे से छू जाय तो कपडा चिप चिप। उसम दुबका रहता है वह। सूना और थका हारा, निढाल पड जाता है और पडते ही नीन्द से घिर जाता ह। तीन साढे तीन घटे मुश्किल से ग्राख मीचता होगा, फिर वही आवाज 'जगिया उठ,' और वह आँख मलता उठ खडा होता है।

आज कुछ विशेष थका हुआ है। खाया भी देर से, वह भी एक समय। शरीर से भी थक गया और मन से भी। पड गया नीन्द आ गई। शरीर तो चीकट रजाई के बन्धन मे है पर ऊबा हुआ मन बाहर निकल गया घर की तरफ। वह देखता है—"स्कूल, गुरुजी और अपना नीम। अरे नीम जल गया दीखता है, बडा उदास होता है। पानी की बाल्टी डालता है। गुरुजी कहते है, "जगिया, नीम को तो भूल ही गया बिल्कुल ? वह उदास है, नीचे देखता है बोलता नहीं। घर की तरफ आ जाता है—भाई और माँ के पास। माँ को देखते ही वह रो पडता है।" मा ! उस चिपक रजाई मे से जोर की आवाज आती है मा—मा मुझे भूल गई तू माँ से सटने के लिये वह हाथ बढाता है। उधर मोदो उठने को है। चटखनी खोलकर वह बाहर आया, "अरे क्या बात है जगिया, उठने का समय हो गया है, उठ।"

उसके कान, जैसे मोदी की आवाज का इन्तजार कर रहे हो, उसकी रटाई हुई जीभ आप ही बोल पडी, "उठता हूँ साब," और वह डरा हुआ विस्मित सा उसी समय उठ खडा हुआ।

"अरे, हाथ छाती पर आ गया था क्या ?" मोदी बोला।

जगिया न कुछ समझा और न कोई जवाब दिया। रजाइ समेट कर रखदी। बैंच ठीक करदी। वही राख, वही कोयले, वही झाड़ू, वही कप प्लेटें जुट गया वह, पर आज माँ की याद उसकी चेतना मे उभरी हुई है, इसलिए एक विशेष उदासी उसके रोम-रोम मे व्याप गई। काम तो वह कर रहा है पर बेमनसा।

कप, प्लेट और पतीली सब रोज धुपते, पुंछते और मँजते हैं। गछ की गन्दगी रोज निकलती है और राज उस पर गीला कपडा फिरता है, लेकिन जगिया का न शरीर ही धुपता, पुँछता और न उसके कपडे ही। कब नहाए और कब कपडे धोए ? कौन टोके, किसको दद ? आने के बाद लोटा पानी भी उसने शरीर पर नही डाला।

दोवटी का एक बडा, और उसपर देशी ऊन की एक पुरानी सूटर, डोरी डाला हुआ एक जाँघिया, बस यही उसकी पौशाक है। उसके पास अध मीटर दोवटी का एक गमछा है। घर से लेकर आया था तब साफ, धुला हुआ था। अब मैला और चीटे सा चिपचिपाता, कडाही पूँछने के मसौते की तरह हो रहा है। दिन मे वह उसे कमर के लपेटे रखता है, सुबह-सुबह कानों के लपेट लेता है। मा ने कहा था, कभी नहाए तो, इसे पहन कर नहा लेना। लेकिन चौथा सप्ताह बीत रहा है वह न नहाया है और न कपडे ही कभी गम पानी मे से निकाले है।

पैरो पर राख, कलूस और मैल की परत है। पगथलियाँ काली और फटी हुई है। नाखून बढ गए हैं जिनमे काला मैल भरा है। बाल रूखे और खडे हैं। कोहनियो के पास मल, और उसमे पडी हुई दरारें सामने दीखती है। अब उसमे न पहले सा

उत्साह है और न वैसी फुर्ती। एक डर और बठ गया है मन मे कि मालिक कही गुस्सा न हो जाय। सामने वाले हलवाई ने सूरजिया को आज बुरी तरह से पीटा है, मुझे भी कभी वसे ही न पीटदे मोदी और उसके लडके।

सामने के 'जनता होटल' मे जगिया जितना ही एक छोरा रहता है सूरजिया। माली है वह। रोज कई दफा वह जगिया की तरफ देखता है और जगिया उसकी तरफ। जगिया चाहता है उससे कुछ पूछू और बात करूँ पर डरता है। यही काम सूरजिया करता है, एक ही अवस्था दोना की और एक ही धन्धा, खिचाव स्वाभाविक है। सूरजिया को यहाँ आए ढाई महीने हो गए। वह पास की गली के, हम उम्र छोरो से भी परिचित है। कभी कभार, मालिक के घर आते जाते, खेलते छोकरो के पास दो मिनट रुक जाता है। एक दो दफा मालिक ने उसे धमकाया है। आज वह मालिक की आँख बचाकर छोरा के साथ काच की गोलियाँ खेलने किसी दूसरी गली मे चला गया। एक-डेढ घटे से आया। सात बज गए थे रात के।

हीरा हलवाई जोर जोर से बोल रहा था। "साला हरामी, भगी की औलाद निकल यहा से। दिन भर धूल खाता रहता है। रोज छाती तोडनी पडती है, बेशरम-बेईमान। नही चाहिए मुझे।" हीरा का बडा लडका आ गया उसने कान पकड कर पूछा, "कहा मरा था, बता सच सच, नही तो हड्डी-पसली तोडूगा तेरी," छोरे ने कोई जवाब नही दिया, रोने लगा जोर-जोर से।

उसने आवेश मे आकर, एक मारा थप्पड और एक दो लात कि छोरा गिर पडा। बोला "साला फरेब करना है, मैं सब जानता हूँ, कह दे सच सच नही तो जान निकालूगा तेरी।" छोरा पडा पडा ही रोता रोता बोला, "गोली खेलने गया था।"

'तो गिट भी वही लेता, यहाँ क्यो मरा ?"

हीरा बोला, "अरे भई, क्यों मारता है इसको, फिर कोई आफत खडी हो जाएगी, पडने दे भट्ठी मे, जाने दे कही, अपने तो रखना ही नही है इसे।"

'तो जा निकल यहाँ से," एक हल्का सा धक्का देकर निकाल दिया उसे। वह चला गया, पता नही कहाँ। उसकी जाती हुई पीठ को देखकर जगिया दुखी भी था और डरा हुआ भी। वह फिरता घिरता काम भी करता और अपने होटल के आगे खडे हीरा और उसके बेटे की ओर भी पल भर देख लेता। बाप बेटे की आवाज उसके कानो मे साफ आती थी और सूरजिया के रोने की भी। मोदी एक तरफ बैठा, जरदे पर अँगूठा चला रहा था। जगिया से बोला, "जगिया ?"

'हाँ साब।"

"देखले, कभी खेलने-खालने मत चले जाना, नही तो तुम्हे भी सूरजिया की तरह हरि और जगदीश आडे हाथो ले लेंगे। अपने तो काम से काम रखाकर।"

वह बोला नही। कप, प्लेटें साफ करने टूँटी पर चला गया लेकिन उसके मानस पर फैलती, भय की परत गाढी हो रही थी। कल उसे महीना हो जाएगा, आए हुए। कल्लू दादा केवल एक दिन आया था, उसके बाद दीखा ही नही। जगिया का हौसला अब जमने की तैयारी कर रहा था, पर मोटा रोग यह है कि ना करना वह नही जानता और हाँ उसकी लडखडा रही है। जागना और भागना ही वह जानता है लेकिन आँखे और टागें दोनो ही हद से ज्यादा थकी हुई है।

जुकाम है उसको। नाक मे पानी पडता है। शरीर कुछ गर्म है। भारीपन उस पर हावी है। दो रोज पहले वह रात भर नही सोया। वह लेट तो निकली नही, पता नही और कितनी लेट आ आकर जुड गई उसमे। मोदी के घर, किसी ने बूदी बनवाई

थी—बीस किलो की। जगिया रात भर भट्ठी मे लकडी देता रहा। सामान इधर उधर रखता, बूंदी मे रस पाता। अन्त मे, उसने खुरपा, झर्रा, टोप गम पानी से साफ किए। कडाही धोई, पोछी। चार बज गए। मोदी बोला, 'अरे अब क्या सोएगा, ले चाबी साफ सफाई कर मैं ही आता हू पीछे पीछे। हा, कल सुबह याद रखकर, भट्ठी मे से कोयले निकाल लेना, भूलना मत।

"ठीक है साब।"

जगिया आ गया पर उसका रोम-रोम चर्रा रहा था। भट्ठी के आगे से एकदम हवा मे आया बाहर, उमे सर्दी लग गई जोरदार। राख निकाली कोयले डाले। झाडू निकालते समय, जी मे आ रही थी 'आध घटे कही दुबक लू।' कप धोते समय, एक दो बार झपकी भी आ गई। उसने टूटी के ठडे पानी से आँखे कछ छिडकी, लेकिन इसमे न नीद की कमी ही पूरी हुई और न शरीर मे कोइ चुस्ती ही आइ। अनियमित बासी, अल्प और एकाहार से पाचन क्रिया रोगी तो थी ही, और हो गइ। सारा शरीर ही तो जवाब दे रहा था। फिर भी हाँ साब, 'लाया', अभी लाता हूँ, मे वह दिन तो किसी तरह निकाला।

आज सर्दी और दिनो से कुछ ज्यादा है। हवा मे शीत लहर है और मौसम भी मन के विपरीत। आध घटे से कोइ गाहक नही आ रहा है। मादी के छोरे चले गये। मोदी बोला, 'जगिया आध घटे मे काम सल्टा ले, साढे दस बज गई है। तू भी अब क्या घर जायेगा, एक कचौरी खाकर चाय पीले। काम नही चले तो भुजिया ओर लेले।"

वह धीमे से बोला "साब, भूख नही है।"

"अरे नही कुछ तो लेले, ल यह कचौरी ही खाले।"

वह वापिस नही बोला, चुपचाप हाथ कर दिया उसके आगे। इच्छा नही थी तो भी लेली कचौरी, एक कागज मे लपेट कर मेज

के दराज मे रखदी। बतन धोने मलने मे आध घंटा लग गया। मोदी को आज कुछ जल्दी भी थी। वह बोला, 'जगिया हरि की माँ के आज कुछ गडबड है न, मैं घर जाता हू, तू सो जायेगा न अकेला? सोया है न दो-तीन दफा पहले भी तो।

"सो जाऊँगा साव।"

चला गया मोदी।

जगिया ने अपनी बेंचे सटाली। रजाई डाल ली उन पर। नाक जुलबुला रहा था और सिर था भारी। जल्दी से रजाई मे घुसा। घुटने छाती मे लगाये ही थे कि उसे सुनाई दिया 'जगिया'।

आवाज उसने पहचानी नही। वह कुछ सकपकाया, यह कौन आ गया अचानक? उसने थोडा-सा मुँह बाहर किया, बिना पूरा देखे ही, उसकी अभ्यस्त जीभ धीरे से बोली—

"हा बाबूजी।"

"यह तो मैं हू जगिया," उसने देखा एक कोई लडका खडा है उसके पास। बरामदे की बत्ती जल रही थी। वह बोला, "सूरजिया हू मैं, पहचाना नही?" वह उठ बैठा। बोला, 'अरे इत्ती रात को?"

'सर्दी लगती है, सुलाले मेरे को भी।" उसकी आवाज मे दीनता थी।

जगिया को नीद ही नही, एक बार अपनी सारी तकलीफो को भूल गया। उसकी ओर देखने लगा। उसका जी भर आया। कई दिनो से सोचता था, इससे कुछ बात करूँ। वह रजाई ऊँची करते बोला, 'ले आ,' और सूरजिया झट रजाई के नीचे। रजाई के एक शरीर मे, दो भोली आत्माएँ एक हो गयी। सूरजिया का शरीर बहुत ठडा था बुरी तरह फटे हुए पैर जगिया के जहाँ कही लगते, बडे चुभते। वह बोला—

"हीरा ने निकाल दिया तुमको?"

"हाँ।"

"कौन-सा गाँव है तुम्हारा ?"

'रामसर।"

"जात क्या है ?"

"माली।"

"माँ बाप हैं ?"

'नही, भाइ है बडा।"

' कितने दिन हुए यहाँ आये ?"

' दो महीनें से ऊपर।"

"यहाँ क्यो आया तू ?"

"भौजाई पीटती रोज, भाइ यहा छोड गया।"

"क्या मिलता है ?"

"रुपया राज।"

' पैसे तुम्हारे ?"

"भाइ ल जाता है।"

"तुमको आज पीटा था।"

'हाँ।' उसकी आँखें भर आयी। बसबसाने लगा। मानो जगिया की हमदर्दी का इन्तजार ही कर रही थी वे, और उसकी चेतना। उसने जगिया का हाथ अपने हाथ मे लिया और उसे अपनें गाल पर फिराया, अगुलियाँ उभर रही थी उस पर।

'अरे जोर की मारी है,' जगिया बोला। वह और बसबसाने लगा।

'चुप रह रो मत' जगिया बोला।

सूरजिया उसका हाथ अपनी पीठ पर ले गया कमर पर एक बडी खराच लगी है, जगिया ने ज्योही उस पर अँगुली लगाइ चमडी चरमराइ, वह आह भरकर बोला, ' आ, हाथ हटालें जलन होती है। उस पर आया खून अभी पूरा जमा नही था। बोला, "हीरा

के लडके ने मारी बूट की।"

जगिया बोला, 'इतना क्यो मारता है वह ?"

"मारता है, मेरे से पहले भी, एक छोरे को पीटकर निकाल दिया, पैसा भी नही दिया।"

"तो अब कहाँ जाओगे ?"

वह बोला नही।

"घर नही जाओगे ?"

"नही।"

"तब ?"

"चला जाऊँगा कही।"

"हीरा के चले जाओ।"

"नही, उसका लडका मारता है।"

"क्यो मारा था उसने तुमको ?"

"मैं खेल लिया था।"

"क्या खेले ?"

"गोलियाँ।"

'अब मत खेलना," वह बोला नही।

जगिया फिर बोला, 'रोटी दो टैम देता है ?"

"कभी दो टैम कभी एक ही टैम।"

'भूखा है तू ?"

'हा, सुबह एक चाय मिली थी।"

"सुबह भी कुछ नही खाया ?"

"नही।"

जगिया बडा दुखी हुआ। उसका मन इधर उधर दौडने लगा। उसे याद आया अरे मेज की दराज मे एक कचौरी रखी है। वह फौरन उठा। कचौरी निकाल लाया।

'ले खा कछ तो धापेगा।"

खा रहा था सूरजिया और भूख मिट रही थी जगिया की। एक ऐसा सुख उसके मानस मे उभर रहा था जिसे कहना वह नही जानता। वह सोच रहा था 'कुछ भुजिया और ले लेता तो कितना अच्छा होता इसका पेट कुछ और भर जाता। उसने कचौरी जब खा ली तो जगिया उठा, बोला, "देख वह रही टूटी, चल मैं चलता हू साथ। टूँटी के पास ही, दीवार के सहारे भटठी की राख मे एक बूढा कुत्ता दुबका हुआ कू-कू कर रहा था। हवा तेज थी। सूरजिया बोला, जगिया डाफर (सद हवा) तेज है सी (सर्दी) लगता है।"

उसने दो गुटके मुश्किल से लिये होगे दोनो ही वापिस आ गये रजाई मे सूरजिया बोला 'जगिया तुम्हारा शरीर तो गर्म है।"

"हाँ ठड लग गई मुझे,"—सो गये वे।

दो ढाई घटे मुश्किल मे सोये होगे आवाज आई "जगिया, उठ बेटे।"

हा साब,' और अँगडाता-अँगडाता वह उठ तो गया, पर न कोइ जान और न कोई चाव, सिर पर उसने जैसे काइ भार ऊँच रखा है। बुखार कुछ था ही। रजाई समेट ली थी। उसने कहा, "सूरजिया उठ तो।"

मोदी बाला, "यह कौन है तुम्हारे साथ ?'

'सूरजिया साब।'

'कौन सूरजिया ? '

'साब जो हीरा हलवाइ क रहता है। '

'तूने क्यो सुलाया उसे।"

"रात को आ गया साब।'

जगिया डरने लगा।

फिर ऐसी गल्ती मत करना समझा ? चोर है साला,"

मोदी ने कुछ उत्तेजना मे कहा ।

जगिया चुपचाप सुनता रहा—गदन नीची किये ।

"बोल करेगा ऐसी गल्ती फिर कभी, बोलता क्यो नहीं," मोदी ने फिर दुहराया ।

'नही साब, नही करूँगा," जगिया ने डरते-डरते धीरे से कहा । सूरजिया उठकर चला गया, पता नही किधर ?

जगिया इस समय अपने काम मे लगा है। सुबह-सुबह, सर्दी जब अधिक पड रही थी, गमछा उसने कानो के लपेट लिया, अब उससे कमर कस ली है। गाहक इक्के-दुक्के आ रहे हैं और वह उदास-उदास और सहमा-सहमा और उनके 'हुक्म ढो रहा है। पिंडलिया उसकी फट-सी रही है, सिर और शरीर दोनो भारी है। धीरे-धीरे बुखार के लक्षण उभर रहे है। बारह बजे है दिन के। न उसको कोई इच्छा ही है खाने की और न अभी मालिक ने ही कहा है उसे। हाँ, चाय उसने एक बार जरूर ली है।

जी करता है उसका कि दो घडी उससे कोई नही बोले। किसी अधे कोने में, वह अपनी चीटिया रजाई की शरण होना चाहता है, ताकि थोडा हलका हो जाए। वह रह रह सोचता है कि मोदी से जाकर कहूँ, 'माब तबियत ठीक नही है, थोडा सोना चाहता हूँ', पर दूसरे ही क्षण वह फिर ऐसा ही कुछ सोचता है कि, 'मेरे पूछते ही मोदी कहेगा, पागल चलते काम म भी कभी सोया जाता है, तबियत लगाकर काम कर, तबियत अपने आप ठीक हो जाएगी, फिर क्या कहूँगा मैं ? वह रात को भी पूरा नही सोने देता, दिन है यह तो, और पूछते ही घमण्ड दिखा दे तो ?' वह नही जाता, काम मे लग जाता है—बेमन, बेशक्ति। शरीर से भी ज्यादा कमजोरी उसके मन मे है। भय है उसमे। तन मन दोनो उत्तर दे रहे हैं, फिर भी अपने बूते से

बाहर वह सोचता है, 'आज आज की तो बात ही है, दात भीचकर, जैसे तैसे धिका दूगा, दो चार घडी मे मर थोडा ही जाऊँगा। कल सुबह तो दादा आ जाएगा। उसके साथ चल दूगा, नही रहूँगा, अब। निकाल दिया है एक महीना किसी तरह—इतना ही कहा था माँ ने।" एक हलका सा आत्म-विश्वास, उसके गम सूखे होठो पर, कही फैलना चाहता है, पर उसकी बढती बेचैनी उसे स्वीकृति नही दे रही है।

बैंचो पर इस समय कोई गाहक नही है। मोदी और उसका लडका जगदीश दूकान मे बैठ हिसाब मिला रहे हैं। हरि टोप के दूध से मलाई उतार कर, एक प्लेट मे भर रहा है और जगिया एक मेज की कोर पर सिर टिकाए, मन के चर्खे पर, अपना तार लम्बा करने मे लगा है। तार बढ रहा है, इतने मे एक आवाज आती है, "छोकरे ?" वह चौका और तार चर्खे से टूटकर अलग हुआ। उसने देखा, पास वाली बैंच पर दो गाहक बैठ रहे हैं। वह उनके पास गया, उसके उदास होंठ धीरे से खुले, "हुकम करो बाबूजी ?" उनमे से एक ने कहा, "पहले एक एक चाय ला फटाफट।"

न इच्छा, न पूरी शक्ति, इसलिए फटाफट वाली बात तो कहा थी। बीमार जीभ से वह बोला, "हाँ लाता हूँ बाबजी", और उसने बडी सावधानी से हाथो को साध हुए, पानी के दो गिलास रखे उनके आगे। चाय दी, किसी तरह सलटाया उनको। इतने मे हरि ने, मलाई की प्लेट साफ करते हुए आवाज दी, "जगिया, मेजो पर बटका मार दे जल्दी, बाल्टी ले जाए तब एक प्लेट यह भी ले जाना।"

वह बोला कुछ नही। धीमे-धीमे, एक गीला कपडा मेजो पर फेर दिया। हिम्मत करके, बाल्टी किसी तरह उठाई और टाँगे घीमना टूटी की ओर चल दिया। लग रहा था कही गिर न

पड़ें। बैठ गया टूटी के पास। बुखार रफ्तार पकड़ रहा था और सास तेजी और गर्मी दोनो। सर्दी लग रही थी उसे। उसने कमर का गमछा खाला, सिर पर से लेते हुए कान बाध लिए उससे, लेकिन यह बाहर की सर्दी नही थी, कलेजे से उठ रही थी उसके। बतन धोने लगा वह, पर चेतना मे उसके एक बेबसी और आँखो मे अन्धेरा तेजी से पैठ रहे थे। बैठा रह पाना, उसे मुश्किल लगा फिर भी उसने अपनी सारी शक्ति बटोर कर, बतन किसी तरह साफ कर लिए, पर बाल्टी लेकर उठना, उसके वश की बात नही थी। सोचा ही था कि दो दो नग लकर कई बार मे बाल्टी ढो लूगा, कि हरि की आवाज आई, "जगिया मै घर जा रहा हूँ, जल्दी से यह टोपिया माज ला तो ?" लड़-खडाता सा वह उठा। ल आया टोपिया काला स्याह। ईंट का एक टुकडा पडा था पास मे। उसे उठाया। टोपिए के पदे पर हाथ ज्यो ही चलाने को हुआ, टुकडा छूट गया, टोपिया वही औंध मुंह और उसके एक ओर जगिया भी लुढक गया बिना इच्छा। पाच सात मिनट बाद हरि ने आवाज दी, "अरे साँझ करेगा क्या एक टोपिए मे ही ?"

उसकी आखे एक बार थोडी सी खुली कि किसी ने आवाज दी है, उसे, लेकिन जडता पकडती चेतना ने उनका साथ नहीं दिया, व वापिस बन्द हो गईं। उसकी भिची मुट्ठिया, कांखो से सटी हुई थी और घुटने सीने से लग हुए। वह पडा पडा थरथरा रहा था।

"अरे, मुँह के ताला है क्या, जवाब भी नही देता ? ' चिढती हुई आवाज फिर गूजी और उसके साथ ही, तमतमाया हरि वहाँ पहुँचा। जगिया को देखा उसने। बाप को एक उतावली आवाज दी, "जी'सा, जी'सा देखना तो, क्या हो गया जगिया के ?" हडबडाता हुआ बाप आया और उसके पीछे पीछे उसकी

बेटा भी । मोदी ने हाथ लगाकर देखा जगिया को, बाला, "हरि, जल्दी से, ढक कर घर लजा इसे, मलेरिया है। राजरस्ते पर होटल है अपना, बिना पैसे पैरवी करने वालो का ताता लग जाएगा अभी, तो अपने बिना मतलब की कोई आफत खडी हो जाएगी। कुनैन की गोलिया पडी है अलमारी मे । घटे पौन घटे के बाद बुखार का वेग कम पड जाएगा तो दो गोली दे देना पानी से। डेढ दो घटे बाद, मैं आ रहा हूँ। डरने जैसी तो कोई बात नही है, पर इस समय हवा उल्टी है भैया। कदम फूक फूंक कर रखने मे ही लाभ है।"

जगदीश ने कहा, "हीरा हलवाई का छोरा तो योही लगा है लटठ लेकर अपने पीछे, मौके की फिराक मे ही है बस।"

हरि उसे गोदी उठाकर घर ले आया। घर के पीछे टीन का एक छप्पर है—तीन तरफ बन्द। उसमे दूकान के लिए माल तैयार होता है। एक किनारे उसमे एक भटठी है। सामने पाँच-सात सीमेंट के थैला की एक थाग लगी है। उसके पास आठ-दस चाय की खाली पेटियाँ, एक दूसरी पर लगी, छत का छूती है। उसके आगे दा तीन पीपे, भट्ठी मे निकाले लकडी के कोयले है। रात-विरात, समय निकाल कर, जगिया ने ही उन्हे निकाला है। एक कौने मे, दो ढाई कुटल फाग की लकडियो का ढेर है। उससे सटता ही, कडाही, खुरपा और झरा पडे है। दीवार मे लगी एक जोधपुरी पट्टी पर, मूगफली के सात आठ खाली कनस्तर रखे है, 'छपरा' क्या पूरा कबाडखाना है। उसी मे चूहे, छिपकलियाँ और कसारिया भी बिना लाइसेंस, अपनी उम्र के दिन ओछे करते है।

पाच सात आदमी बैठ सकें, इतनी सी जगह, छप्पर के बीच मे बची हुई है। उसमे मूज की एक पुरानी खटिया लगी है, उसकी दावन ढीली और गली गली सी है। झोली सी बनी हुई है वह। उसकी

टूटी हुई मूज जगह जगह जमीन से लगती है। एक गुदडी है उस पर मटमैली सी—जिस पर जगिया लेटा है। एक गदड है उस पर—मोटा और जुगा पुराना। मुट्ठियां ब द, घुटनो को छाती से चिपकाए, वह तेज सास ले रहा है। पास खडा आदमी, उसकी धौकनी को सहज ही मे सुन सकता है। कुछ देर बाद थरथराहट मिट गई। पसीना आ गया और ताप गिर गया। हरि ने उसे कुनैन की गोलिया दे दी पानी से। उसे कुछ पूछता, लेकिन कमरे के आगे एक कोई गाहक खडा था—वह चला गया।

गाहक को चाय पिलाई। उसे दो बोरी चीनी चाहिए थी। चीनी का उस समय कट्रोल चल रहा था। लोग बाहर भीतर स ब्लैक म कबाड कर, काम निकालते थे। दो बोरी मे दो सौ रुपए की 'मजूरी' थी। सौदा आखिर पौने दो सौ मे पटा। जगिया ने एक दो बार धीरे से कहा, "पानी," पर उसकी आवाज गदड के मोटापे से थोडी ऊपर उठकर, छप्पर मे ही विलीन हो गई। होठ सूखता वह पडा रहा। हरि एक बार और आया छप्पर मे। पाच रुपए टीन के हिसाब से—एक कोई खाली टीन लेने वाला आ गया था। सारे टीन गिना दिए उसने। हिसाब करता करता, उसके साथ फिर चला गया वह। मोदन एक गोमुखी म हाथ डाले घर मे बैठी थी वह भी नही आई इधर। बडी बहू रसोई की तैयारी म थी। फरमायशी गाने सुनकर, नीचे आई है। छोटा अपने फटे चेहरे पर, काच के सामने बैठी अफगान स्नो का अंगुलिया फिरा रहा ह। सारा घर व्यस्त है—फुरसत किसी को नही।

पाच बजते बजते मोदी आ गया। वह जगिया के पास आया। हाथ लगाकर उसे देखा बुखार नही के बराबर था। गूदड का एक किनारा, थोडा हटाया उसने, बोला—

"क्यो रे, गोली ले ली ?"

जगिया ने थोड़ी आँखें खोली। मोदी की तरफ देखा। उसके सूखते होठ थोड़े हिले, "हा साब।"

"कुछ लेने की मन मे है ?"

"पानी पीऊँगा साब।"

"अच्छा।"

मोदी घर मे गया। बहू से एक कप दूध मांगा। बहू ने पतीली उठाई। आध पौन कीलो दूध था उसमे—सुबह का। दूध को बिना देखे ही, उसने कप भर दिया। दो मक्खियाँ ऊपर तैर उठी। उन्हे अपनी तर्जनी मे निकाला और कप ससुर को पकड़ा दिया। मोदी ने एक गिलास पानी भी ले लिया। पहुचा जगिया के पास। जगिया उठने लगा धीरे धीरे। मोदी ने थोड़ा सहारा दिया उसे। जगिया ने पहले एक गुटका पानी लिया और फिर दूध पी गया। मोदी बोला, घबरा मत ठीक हो जाएगा, सोते समय एक कप और पी लेना। कल तक काम करने लग जाएगा।" मोदी चला गया। जगिया फिर पड़ गया गुदड़ी पर। सुबह का दूध था स्वादहीन। उसका जी मिचलाने लगा।

मोदी घर से जब निकलने लगा तो उसकी बहू बोली, "इस छोरे का अपने घर पहुँचा दो—यहा सेवा कौन करेगा इसकी ?"

मोदी बोला, "महीना दो महीना तो करनी है नही सेवा, एक दो दिन देख लेते हैं ठीक हो जाए तो वा भला, नही तो, घर तो है ही।"

"एक दो दिन क्यो, महीना भर रखो चाहे, मेरे भावे तो। मेरे तो दुखते है गोडे, अपना जी लिए पड़ी रहती हूँ। बहूएँ दिन भर ऊपर टँगी रहती हैं—दो टैम टुकड़ा सेंक देगी तो समझलो—गगा नहा लिए।"

इतने मे हरि आ गया बोला, "ठीक कहती है मा। अपन तीनो को तो साँस लेने की भी फुरसत नही है—और माँ से कुछ

होना जाना नही, तो सेवा कौन करेगा ?"

मोदी एक मिनट बैठ गया और समझाने की साधु-मुद्रा मे बोला, "अरे भई, लात भी दुधारू गाय की ही खाई जाती है। टीगरो की कमी नही, टक्के टक्के मे रेवड उछरते है उनके, पर उन्हे समझदार कोई, अपना पगोथिया भी नही छूने देता। कल की सी बात है, दो का तो तुमने ही देख लिया। एक तो साला हफ्ता भर भी नही रहा और रफ्फू चक्कर, पता नही लगा उसका, कहाँ गया ? दूसरा, दस बार कहते, तब एक बार सुनता। काम चोर तो था ही, अकाल पीडित सा खाता भी कितना था ? आखिर उस मलेरिया को निकाला तब जाकर कही चैन मिला। यह छोरा काम करने वाला है तब कहता हूँ भई ! अपने को तो ऐसा सौ मे भी हाथ नही आएगा। सुबह चार साढे चार से लेकर रात के बारह एक बजे तक खटता है—इतनी देर मे तो, मशीन को भी ठडा करना पडता है एक दो बार। ना कहना तो साले को आता ही नही और इस पर भी, मार क्या है इसकी ?" हवा मे हाथ से आकार बनाता हुआ बोला, "सिर्फ आधी मुट्ठी भुजिया और दो घूट चाय, चूहा भी इससे ज्यादा चर जाता है। छोर का रोना नही, रोना इस बात का है भैया।"

मोदन ने गोमुखी मे से हाथ निकालते हुए कहा, 'मै भी धान खाती हू, इतना तो समझती हूँ, पर समझ क्या काम आए, जब सेवा करने वाला कोई भी नही हो। बीमार का क्या, अभी इसे दस्त उल्टी हो, तो बहुएँ उठाएँगी या दूकान छोडकर आप आ जाओगे, और हटात कल को कुछ उल्टा हो जाए, फिर ?" एक पल उसने मोदी की ओर कुछ कडी नजर से देखा, फिर बोली, "लेने के देने पड जाएँगे, भागते गली नही मिलेगी। काम चलेगा वैसे चलेगा, ठीक हो जाए तो पाँच सात दिन बाद फिर बुला लेना—न कल्लू भागेगा और न इसका गाँव ही। हाथ पसरे

इतनी दूर तो गाव है, हरि को भेज देना।"

बहस को आगे बढान मे मोदी को कोई लाभ नही लगा। कुछ झेप की नरमाई लिए हुए बोला, "तुम ठीक कहती हो, मेरी इसमे कोई जिद् थोडी ही है, मैं तो खुद डरता हूँ ऐसे झमेलो से। रात रात की तो बात ही है, चलो देख लेते है, फायदा नही हुआ सुबह तक तो कल्ल को बुला लेगे।"

बाप बेटा दोनो चले गए।

साढे छह-पौने सात के आसपास फिर आए दोनो। आते ही मोदन गले पड गई मोदी के। बोली 'मैंने क्या कहा था, सुनते हो नही किसी की, बस, एक अपनी ही अपनी।"

मोदी अवाक् रह गया। बोला, "आखिर बात क्या हुई?"

"क्या हुई, जाकर देख लो पीछे।" एक क्षण के लिए मोदी के पैरो के नीचे से जमीन खिसकने लगी, जब मोदन ने आगे कहा, "कौन साफ करेगा उल्टी उसकी?" अब मोदी के जी मे जी आया—बात पूरी सुनने पर। वह बोला—

"उल्टी ही तो हुई है?"

"पता नही, क्या क्या हुआ है?" मोदी एक बार फिर तैरने डूबने लगा, वह उसकी ओर अपराधी की तरह देखने लगा। वह बोली, "दस मिट पहले दो तो हुई उल्टिया, सिरदद और जीदोरा अलग। मैंने तो ये दस मिट राम-राम करके निकाले है। दूकान भेजू भी तो किसको भेजू? बडी बहू ने, एक गिलास पानी दिया नीवू निचोड कर—तब कही जाकर—ओय हाय बन्द हुई उसकी।'

मोदी कुछ घबराया हुआ सा, पीछे गया। देखा उसे, सोया हुआ है। बिजली के प्रकाश मे उसने देखा, उल्टी कुछ तो रेत सोख गई है, और कुछ पर मक्खिया उठ बैठ रही हैं। मालूम पडता है छोरे ने मुंह निकाल कर ही उल्टी की है—गुदडी के

एकाध छोटा ही लगा दीखता है। गुदड के एक किनारे कुछ दूर हाथ फेरा उसने बिल्कुल सूखा था। उसने गुदडी का किनारा कुछ हटाया, बोला, "जगिया क्या दुखता है रे ?"

उसने धीमे से कहा, "साब सिर।" आँखे उसने नही खोली।

"दूध लेगा ?"

"नही साब।"

"ले ले थोडा ?"

"बिल्कुल नही साब, उल्टी हो जाएगी।"

"और पानी ?"

"लूगा साब।"

"लाता हूँ रे।"

मोदी घर मे आ गया। हरि से बोला, "बेटा, साइकल ले जा, कल्लू को साथ ही ले आना। एक बैल गाडे वाले से बात कर लेना—दो रुपए कम बेसी मत देखना, काट लेंगे देते समय।"

हरि उसी समय निकल गया—साइकल लेकर।

९

मोदी ने जगिया को पानी पिला दिया। खाली पेट है वह। एक कप दूध मिला था उसे, और उस दूध ने उसका कई दिनो का खाया पिया निकाल दिया। आते औधी करके मरोड दी उसकी। पेट की खुश्की और कुनैन की गर्मी से सिर चढ रहा है उसका। अर्क निकाले हुए की तरह वह, गूदड के नीचे चुपचाप पडा है—उस कबाडखाने मे—बिल्कुल अकेला। यहाँ तक कि चूहे और छिपकलिया भी इस समय खोखो और लडकियो के नीचे प्राण बचाने भाग गए हैं। सर्दी तेज है और हवा मे है कुछ तीखापन।

भोजन करके, मोदी ज्यो ही उठा, मोदन ने उसके हाथ मे एक कटोरी थमा दी। खाने के बाद वह प्राय रोज अपने कुत्ते को कुछ न कुछ डालता है। कटोरी कुत्ते के लिए ही थी। वह बोला, "आज फुलका नही है क्या ?"

मोदन ने कहा, 'है तो फुलका ही, दूध मे चूर दिया। आधेक कीलो दूध पडा था सुबह का, आधा तो आपने जगिया को पिला दिया, आधा बच गया था उसको यो ही फेकने से क्या फायदा—कुत्ता ही खा लेगा बेचारा।"

"अच्छा, अच्छा," वह आगन की तरफ बढ आया। उसने आवाज दी, 'झीफरे ?" और रोज की आवाज का अभ्यस्त कुत्ता, पूछ हिलाता एक ओर से आ पहुचा। कटोरी मोदी ने उसके आगे रख दी। कहा, 'ले झीफरे खा ले।"

पूछ हिलाते कुत्ते ने कटोरी को दो तीन बार सूघा, लेकिन

उसके मुह नही लगाया। उसके आगे, चू चू करना, पूछ वैस ही हिलाना रहा।

"क्यो, क्या है रे, धापा हुआ है क्या ?" उसने कटोरी को फिर उसके आगे सरकाया लेकिन वह सूघ कर दूर हट गया। मोदन ने पूछा, 'कुत्ते को रोटी अभी-अभी डाली है क्या ?"

वह बोला, "नहीं तो।"

"वह तो मुह ही नहीं लगाता उसके। एक फुलका दे तो।" फुलका लेकर मोदी ने उसके आगे डाला। पूछ हिलाता हुआ वह, उसे तुरत ही चट कर गया। मोदी ने सोचा, 'कटोरी मे क्या बात है ?' फिर उसने कटोरी उठाई, सूघा उसे। खट्टी, अरुचिकर और पितलाई हुई (पीतल का काट समाया हुआ) गन्ध आ रही थी उसमे। वह बोला, "अरे यह बात है, फीफरा बडा अमीर हो गया है तू।' कुत्ते ने एक बार वेधक दृष्टि से उसकी ओर देखा, वाणी होती उसके तो पता नही, मोदी को वह क्या कहता, पर इतना निश्चय था कि वह जगिया को, सप का दूध कभी नही पीने देता। वह मोदी के क्षणिक प्यार से आँख बचाता एकबार आगे को ओर सरक गया। मोदी भी बाहर आया चौकी पर। बगलबन्दी पहने, सिर पर कनपच के कई आट लगाए और कम्बल आढ जरदा लगा रहा था वह। वह जरदा उसने होठ के नीचे दिया ही था कि कल्लू उसे आता दीखा। कल्लू ने भी कनपच कस रखा था और दालडा कम्बल, उसके कन्धो से होता हुआ, आगे को ओर लटक रहा था। हाथ जोडकर, दूर ही से उसने राम-रमी की। मोदी बोला, "आ कल्लू भगत, आजकल तो ईद का चाँद हो रहा है—दिखाई ही नही पडता ?"

"साब, आठ दस रोज से बाहर गया हुआ था, कल ही आया हूँ। आज सोचा था, कल सुबह जाऊँगा, छोरे का महीना भी पूरा हो लिया है, और एक पथ दो काज, आपके दरसन भी कर लूगा।

हरि बाबू ने कहा जी'सा (बाप) ने अभी बुलाया है—छोरे के कुछ गडबड है, सुनकर सारा चिन्ता खडी हो गई, क्या कुछ है, कहो तो सही।"

"चिन्ता होनी तो सहज है कल्लू, तुम बीच मे हो ना इसलिए, पर ऐसी कोई बात नही ह। दोपहर को मामूली सा बुखार हुआ, दवाई दे दी, दूध पिला दिया, ठीक था, अभी घटा भर पहले साली उल्टी हो गई, तब मेरा भी थोडा माथा चकराया।"

"चकराने वाली तो ग्वर सही है साब, लेकिन चार छह घटे बाद तो मैं बिना बुलाए ही आता।"

"अरे तुम नही समझे, चकराना इस बात का है कि साली बीमारी का कोई भरोसा नही, कब हाथ से बाहर हो जाए, बाद मे अपने चाहे सौ इलाज कराएँ, तो भी मा बाप के विश्वास नही जमता। घाडा पसीना पसीना हो ले, और सवार तनिक भी राजी नही हो—मुश्किल तो यह है। जमाना तुमसे छिपा है नही। वैसे भोला छोरा है, बात बात म मा बाप को याद करता रहता है। तुम्हारा भी ओलम्भा टले, यह सब सोचकर ही मैंने तुम्हे बुला लिया। यह रहा गाव। घट डेढ घट की तो बात ही है। जल्दी करने का एक कारण और भी है कल्लू?"

"कहो साब?"

"इतना तो तुम निश्चय समझो कि यहाँ यदि इसे ठीक होने मे दो दिन लगते ह तो अपने घर मे इसे, एक ही दिन लगेगा, क्यो मानते हो?"

"हाँ, वैसे कुछ फक ता पडता ही है साब।"

"दूसरा, तेरे से क्या छिपाऊँ, तू घर का आदमी है, हम तीनो तो रहते है कोल्हू के बैल बने हुए दिन भर, घर की हालत तू जानता ही है, अब छोरे को पानी का गिलास भी दे तो कौन दे?"

"चलो जो हुआ ठीक है साब, मेरे इसमे क्या फक पडता है, दो

घटे बाद मे नही—दो घटे पहले सही । अपने तो मोटी बात यह है कि छोरे के ज्यादा गडबड नही होनी चाहिए ।"

"नही रे रे नही, हाथ कगन को आरसी क्या, छप्पर मे सा रहा है, देखले जाकर ।"

ज्योही वह छप्पर की ओर जाने का हुआ, मोदी ने टोका, 'सुन, वसे तो तेरे मेरे एक दात रोटी कटती है पर व्यवहार मे हिसाब-किताव बाप बेटे का भी होता है—बता क्या दे दू इसका ।"

"छोरे ने चाकरी तो आपकी ठीक ही बजाई हागी साव ?'

"अरे ठीक ठीक को छोड, छोरा हो ता है आखिर, । कई बाते समझानी पडती है उसको, पर मै तुम्हे देखू या छोरे को ? तुम्हारी वात का तूल देता हूँ मैं तो ।'

"मेहरबानी है साव आपकी ।

"हाँ तो क्या देना है सुना ?" कम्बल को कसते हुए मोदी ने कहा।

"पचास तो है ही साव, दा पाच ज्यादा हो तो मेहरबानी आपकी ?"

"वाह कल्लू वाह ! घर के आदमी होकर यह फायदा पहुँचा रहे हो ? सामने हीरा के एक छोरा रहता है—तीस रुपये मे, झूठ कहता हूँ तो पूछ ले तू ?"

' नही साव, ऐसी क्या वात है, मैं तो भरोसा करता हूँ आपका, आप झूठ बोलते हैं, सवाल ही नही उठना ।"

"तो मेहरबानी न तू पाच जासनी दिना दे ।"

"नही साव, बहुत गरीब है, पचास का ता मैं कहकर लाया हूँ—वैसे आपके कानो मे भी वात तो मैंने थोडी बहुत डाल दी थी।"

"अरे भले आदमी, कीमत बाजार भाव से लो दी जानी है या अपने मन से । इस पर भी तेरा मन नही मानता है तो चार होटल वालो से और पूछ ले और वैसे मेरे तो क्या है, पाच और सही चालीस दे देता हूँ ।"

कल्लू के सहज सत्य का मोदी ने पल भर के लिए लगड़ा कर दिया। वह मुह लटकाए उसकी ओर देखने लगा। आखी मिनट रुककर बोला, "तो ठीक है साब, जो देना हो सो दद—समझदार ह आप।" वह तो कल्लू ने दिया पर था दुखी और कुछ उत्तेजित भी। वह जान गया कि मोदी दस रुपए के लिए, अपनी नीयत बिगाड रहा है, लेकिन बरसा से 'हुकम बाबू सा' का भार ढोने वाली उसकी प्रकृति म इतना साहस नही था कि अपने सत्य के लिए वह खुलकर सामने आता। उसने सोचा, 'पानी पीकर अब जात क्या पूछनी है? दस रुपये के पीछे, बरसो की रामरमी तोडना ठीक नही। अन्न पानी भी खाया है इसका कई बार।' वह आँगन मे से होता हुआ पीछे की ओर चल पडा। मोदी गाडे की वाट देखता वही बैठा रहा।

कल्लू ने उडती नजर से, रसोई के आगे बैठी मोदन का देखा। वह भाभर मे ओटी, शकरकन्दे छील-छील कर खा रही थी। ऊपर की छत से आती हुई रेडियो से धुन उसने सुनी। वह छप्पर मे आ गया। लट्टू के प्रकाश मे उसने, पसरा हुआ कबाडखाना देखा और देखा उसने लोहे लक्कड से घिरा जगिया का पलग, वह खटिया। वह उदास ही नही हुआ, उत्तेजित भी। सोच रहा था, लोह लक्कड के इस अम्बार म एक बार तो किसी नीरोग और जवान आदमी को भी नीद नही आए और यह बीमार छोरा—नौ ही साल का। पानी पेशाब का पूछने वाला भी कोई नही यहा। उसने गूदड थोडा हटाया। शरीर के हाथ लगाया। बुखार था, पर साधारण। गूदड गले तक हटा दिया उसने उसकी आँखे बन्द, घुटने पेट से चिपकाए वह पडा था। चहरे को वह गौर से देखने लगा। रह रह उसके मन म पीडा उठने लगी। पहचानने म नही आ रहा है यह। सूखकर काँटा हो रहा है—केवल एक ही दिन म। मोदी झूठ बोलता है। लाया था तब यहा चकमे की गेन्द की

तरह उछल रहा था। क्या मुंह दिखाऊँगा इसकी माँ को। इसी-लिए भजा था मेरे साथ ? विचारा मे उलझा, वह धीरे से बोला, "जगिया, क्या दुखता है बेटा ?"

पोडा मे डूबे जगिया ने अपनी आख—एक क्षण के लिए खोली, 'फिर बन्द कर ली। "मैं कल्लू हूँ जगिया, कल्लू।" उसने फिर खोली आखें, एक पल कल्लू की ओर इस तरह देखा, जसे वह उसे पहचानने की कोशिश मे है। 'कल्लू दादा,' अभी कल्लू दादा कमे ? क्षण भर के तक के बाद वह पहचान गया। उसे लगा, कल्लू अभी जैसे कोई दवदूत होकर आया है उसके पास। 'दादा' वह इतना ही बोला और उसकी आखे एक दम से वह उठी। उसने अपने कमजोर गम पतले हाथ ऊपर उठाए—दादा की गलबाही भरने। दादा ने अपनी बूढी कापती गदन, उसके हाथो के सामने करदी। गलबाही भरली, उसने अपनी समझ मे इतनी पक्की कि कोई उसे छुडा नही सके। वह बोला, "दादा, अब तुम कही मत जाओ।" उसके हाथो की गर्मी से कल्लू की सारी चेतना गम हो उठी। कागसी (अगुलिया मे अगुलिया गुथी हुई) लगी हुई है। वह बोला, "दादा, दादा तुम आ गए, दादा," उसका रोम रोम इस ध्वनि से बिंध गया। आधी मिनट के लिए खो दिया कल्लू ने अपने आपको। उसकी झुकी हुई गदन, जगिया के चेहरे पर टिक गई, आसू वह उठे और जगिया के आँसुओ से मिल—दर्द की एक ही धरती पर वही कही सूख गए। उसने गदन उठाई। घिग्घी बध गई उसकी। रुँधते गले मे वह बोला, "क्या बटा, रोता क्यो है ? मैं कही नही जाऊँगा, तुम्हे लेने के लिए ही तो आया हूँ, गाँव चलेगा न ?"

धीमे से वह बोला, "हा," आसू वैसे ही गिर रहे थे।

"अभी ले बेटा।"

हरि आगया। बाला, "कल्लू गाडा आ गया है।'

"हाँ, तैयार हू बाबू।" उसने उसे गोदी उठाया और चलने लगा। दरवाजे पर मोदी बैठा अंगूठा चला रहा था। जगिया ज्योंही उसके पास से निकला, उसने आंख बन्द करली। उसकी हालत, इस समय भेडिए की एक ऐसी माद से निकलने वाले मेमने की तरह थी, जिसके आगे कोई भेडिया बैठा हो। एक भय उसमे संचरित हो रहा था कि मुझ निकलते को देख, वह रोककर कही फिर यह न कहदे, कि 'जगिया कहा जाता है, चल वापिस अन्दर।' कल्लू ने उसे गाडे पर सुला दिया और अपनी गम कम्बल उस पर डाल दी। फिर आप बैठ गया। जगिया का सिर अपनी साथल पर टिका दिया और अपना हाथ उसके गर्म ललाट पर। हरि आया। सात रुपए उसने गाडा किराया काटकर, तेतीस कल्लू के हाथ मे रख दिए। कल्लू ने एकबार हरि की ओर देखा और एक बार अँगूठा चलाते हुए मोदी को। गाडा चल दिया।

कल्लू सोच रहा था, 'महीने भर पहले इसके बाप को ले गया था गाडे पर, आज उसके बेटे को—कसा सजोग है भगवान का। पहला एक उपकार बन गया, मेरे ही कोई पुन (पुण्य) का उदै (उदय) हो गया था इसलिए। उसकी दशा उस खुद ने ही बिगाड ली थी। दूसरा यह, मेरे जीवन भर के उपकारो पर पानी फेरने वाला पाप बन गया—इसकी यह हालत मने की है—पापी भी तो म ही हूँ। इसे ले जाने की परेशानी नही, न दस रुपए कम पाने की, दुख इतना ही है कि उस गरीबनी पर क्या बीतेगी—"एक बार वह काप उठा। हे परमात्मा—दुखियारन के इस छोरे के कुछ न हो, भले ही मेरे प्राण कल जाते—अभी चले जायँ।" गाडा कस्बे को पार करता हुआ बढ रहा था।

उसने जगिया के पेट पर हाथ रखा, बुखार बढाव की ओर था। उदास कल्लू ने धीरे से पूछा—'क्या दुखता है बेटा?"

"सिर", धीरे से जगिया बोला।

'ठीक हो जाएगा, घर चल रहे हैं बेटा।"

"दादा, पानी ?"

"अभी लाता हूँ बेटा।"

कल्लू जिस ढाबे मे काम करता था, वह करीब चालीस कदम पीछे छूट गया। गाडे को ठहराया। उतरने को हुआ तो चतरू गाडे वाला बोला, "दादा उतर मत, गाडा मोड लेते हैं उधर-कौन सा पैट्रोल खच हो रहा है अपना।"

कल्लू ने उसे थोडा पानी पिलाया, दो चाय लाया। एक जगिया को और दूसरी चतरु को। जगिया से बोला वह, 'ले बेटा गम-गर्म चाय पीले, तिप (तृषा) नही लगेगी।" थोडा सहारा देकर उसे पिला दी। होटल मे पडी अपनी दरी ल ली उसने—जगिया के नीचे बिछा दी। अपनी साथल पर उसका सिर टिका लिया—गाडा फिर चल पडा।

कस्बे मे आते-जाते मिलते रहने क कारण चतरु कल्लु को साधारणतया जानता है। वह बोला, "दादा, आज यह किस की बेगार ढो रह हो तुम ?"

लम्बी सास खीचता वह बोला, "चतरू किस की बताऊँ भाई, बेगार नही यह पहाड है। ठीक एक महीने पहले किसी दुखियारन के कलेजे को हठ करके लाया था—सीधा, सुन्दर, नाचता-कूदता, सयाना और काम करने वाला, महीने भर बाद आज उसकी दुदशा और मरे पाप को ढो रहा हूँ।" कल्लू ने कथा को थोडा समझाया उस। चतरु बोला—"दादा, रखा कहा था इसे ?"

"मोदी के होटल म।"

"तब ता दादा, जरूर पाप लगेगा तुम्हे।"

"लगेगा क्यो नही, लगेगा ही वह तो। पहल कभी पाप किए होंगे, तभी सन्तान नहीं हुई मेर। अब खुद के नही ता पराई को डुबोकर, अगले जीवन के लिए, फिर दीवार खडी कर रहा हूँ।"

"दादा वह इतना बेईमान, चितपुट करने वाला है कि साल मे दस छोरे छोडता रखता है। राम करे तो इसे पूरी रोटी भी नही दी होगी ?"

"रोटी तो खर क्या नही दी होगी ?"

"क्या बात करते हो दादा, मेरे मुहल्ले का एक छोरा रहा था मालियो का उसके, बीस दिन रखकर, सूखा टरका दिया उसको, कानी कौडी भी नही दी। अच्छा, छोड सब, इस छोरे को पूछ ता सही एक बार कि मोदी रोटी इसे कैसे देता रहा ?"

कल्लू बोला, "जगिया ?"

बुखार बढ रहा था उसका, चाय के कारण, चेहरे पर पसीना था। सांस थी गम। कल्लू ने फिर कहा, "जगिया सुन तो।

"हा" वह बोला धीमे से।

"बेटा रोज दो टम खाता था मोदी के यहाँ ?"

"नही।"

"तो ?"

"दो टैम तो कोई कभी ही, और," कहकर वह रुक गया।

"हा और क्या बेटा ?'

"और कभी बिल्कुल नही।"

"दिन भर या ही ?"

"थोडा भजिया, एक कप चाय।"

"कल्लू समझ गया कि उसकी यह हालत क्यो है। वह बोला "चतरु तुम ठीक कहते हो, पर अब क्या हो ?"

"कितने मे रखवाया था ?"

"अरे क्या रखवाया था, पचास का कहा था, दिए तब चालीस, उसमे भी सात रुपए, गाडा किराया काट लिया।"

"गाडा किराया मोदी ने नही दिया ?"

"डाकिन भी कभी बेटा देती है किसी को ?"

चतरू ने अपनी जेब मे हाथ डाला। दो रुपए का एक नोट निकाल कर, कल्लू के हाथ मे थमा दिया। चादनी छिटक रही थी उस समय।

"यह क्या ?" कल्लू ने कहा।

"दादा, गाडा किराए की रूण (आम दर) पाच रुपए ही है आजकल।"

"तो क्या हुआ, रात की टैम है, रुपया दो रुपया तो सब जगह कडा लगता है।"

"रात होगई ता कौन सी बिजली गिर रही है दादा, इस नन्हे मजूर से मै, दो रुपए ज्यादा लूगा ? मोदी जैसे ठगोरो स तो, दो की जगह चार ज्यादा ले लेता तो भी थोडा था, बिना मतलब, कटी पर नही मूतता दादा वह।"

'ठीक है चतरू, चाहे जैसा भी है वह, तुमसे सात रुपए की जब बात तय होचुकी है तो तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए।"

"दादा, चराते हो मुझे भी, पैसा देने वाले असली किराए-दार तो तुम भी नही, यह नन्हा मजूर है, मैंने उससे कोई बात तय नही की है सात रुपए की—और तुमसे भी नही।"

"कल्लू ने उसकी तरफ बड गौर से देखा। फटी सी कम्बल ओढ, घुटनो तक धोती, दसो दिनो की बढी हुई दाढी, कपडों मे भी कोई तन्त नही इट पत्थर से जगह जगह मुचा टूटा गाडा और थका हुआ जनावैल, सभी से गरीबी झलक रही थी। कल्लू उसकी तरफ देखता एक बार सारा दुख दद भूल गया। उसे फिर समझाया पर वह टस से मस नही हुआ। गाडा अपनी सहज चाल म चल रहा था, घर ज्यो-ज्यो नजदीक आ रहा था, कल्लू की उदासी बढ रही थी। जगिया का पसीना उसने भीतर हाथ डाले डाल, अपने गमछे से पोछ दिया। समय नौ साढे नौ का हुआ होगा। वे घर पहुच गए।

मघिया तो सात बजे ही खाना खाकर सोगया। दिनभर का थका हुआ था वह। जानकी की तबियत कुछ भारी थी। आध पौन रोटी भी उसने मुश्किल से खाई होगी। रुचि ही नही थी। रात उसको नीद नही आई। एक बार आँख खुलते ही मन उचट गया था। अब भी मन उसका एक दुविधा से निकलकर, दूसरी मे डूब जाता है। बात यह है कि दो दिन मे दाहिनी आँख फरक रही है उसकी। सोचती है, कौनसी आफत खडी होगी ? उसने बूर (एक घास) के तिनके का एक टुकडा तोडकर, फरकने वाले हिस्से पर जीभ से गीला कर चिपका लिया है, पर आँख नही मानती। उदासी बढ जाती है।

वह अपनी खटिया के पास एक बोरी पर बैठी है। दो तीन दफा हनुमान चालीसा गुनगुना लिया, फिर मन्दिर मे देने के लिए सौ सवासौ बत्तिया बटली। ज्योही उन्हे बन्द किया, वही घोडा, वही मैदान, मन काबू से बाहर होने लगा। उसे याद आया, आज सुबह तो रोटियो की बाट फटी थी—कोई आना चाहिए—शुभ ही तो है यह। परसो तवा हसा था, सकुन अच्छे ही हैं। इतने मे आँख फिर फरक उठी, मन फिर उधर चला गया। उसने उस हिस्से का थाडा, तर्जनी और अगूठे से चमठाते हुए हवा मे कहा, "क्या आग लगी है तेरे, खाएगी क्या ? बाबा तू है मोटा स्वामी, लाज रखना।" मनकी इस दौड भाग मे जब उसने चिमनी की ओर देखा, तो सोचा "अरे, इतनी रात हो गई, तेल

फालतू ही जल रहा है, इसे बडी (बुझा) करके पड़।"

वह उठने ही वाली थी कि, 'बाई' कहता हुआ कल्लू जगिया को लिए झोपडे मे प्रवेश हुआ। जानकी एकबार सन्न रह गई। वह फटी आखो से देखती बोली—

"दादा, यह क्या ?"

जगिया को खटिया पर लिटाते कल्लू ने धीमे से कहा, "क्या बताऊँ बाई, जगिया को कुछ बुखार हो गया।"

आहिस्ता से वह बोली, "ज्यादा है क्या ?"

"हा इस समय तो कुछ ज्यादा ही है बाई, रवाना हुआ तब तो कम ही था।"

चिमनी के धुधले प्रकाश मे, गर्म और तेज सास लेते जगिया को जानकी ने देखा। मुह उसका निकल रहा था। वह बोली, "दादा, एक दिन के बुखार मे इतना कमजोर हो गया है !"

कल्लू पश्चाताप मे डूबे, किसी समझदार अपराधी की भाति आधा मिनट चुप रहा। उसका गला कुछ रुँध गया। वह डूबा हुआ सा, धीरे धीरे बोला, "बाई मैंने ही तुम्हारी तकलीफ को बढाया है। सारा अपराध मेरा है किसी का नही, मैंने इसे सभाला नही, मुल्क मे भटकता फिरा इधर उधर। दूसरा, सबसे मोटा अपराध यह है बाई, कि मैंने एक ऐसे भेडिए का विश्वास कर लिया, जिसके चेहरा आदमी का लगा था। मैं उसे जानता हुआ भी नही जान सका। सभलाकर निश्चित हो गया, बडा पश्चाताप है मुझे इस पर, पर क्या हो अब !"

"नही दादा, आप यह क्या कहते है, आपकी भलाई, मैं जीवन भर नही भूल सकती।"

"मगर बाई, भलाई से सौगुनी बुराई करके, भलाई को मैंने ढक दिया है।'

"नही दादा, आप मन छोटा न करे, भलाई ढकी नही जाती।

मेरी तकदीर मे रोना लिखा है तो टालेगा कौन ? मैं आपको कोई दोष नही देती।'

"बाई यह तुम्हारा बड़प्पन है, पर अब एक अज मेरी भी सुन लो।"

"अज नही हुकम करो दादा।"

"हुक्म तो मैंने जीवन भर ढोया है बाई, अज करना ही जानता हूँ मैं तो।"

"कहो दादा!"

"बाई पश्चाताप से अब, कुछ पार पडना है नही, पार तो इलाज से पडेगा। वैद्य को लाता हूँ अभी पर इतना कह दूं तुम्हे कि परमात्मा की सौगन, तुम मेरी धम की बेटी हो। इस छोरे के इलाज पर पानफूल जो भी चढेगा, उसमे तुम मुझसे कुछ नही पूछोगी।"

"चढने दो दादा, मेरा हाथ फुरेगा वैसे-वसे मैं हलकी होती रहूँगी।"

कल्लू ने एक क्षण उसकी ओर याचको नजर से देखा और बोला, "तो तुम मेरी पीड को घटने नही दोगी। हल्का नही हुआ तो, टूट जाऊँगा।" वह मौन हो गया, उसकी आखे गीली हो उठी।

"दादा, माफ करो, मुझे कुछ नही कहना, जगिया आपका है।"

"भगवान का है बेटा, भगवान का", वह फुर्ती से निकल पडा।

जानकी ने कहा, "जगिया।"

वह नही बोला।, धौकनी उसकी तेजी से चल रही थी। शरीर बहुत गम था। जानकी भरी आखो से उसके साथ सो-गई। उसका जीवन सागर उमड पडा। सिर से लेकर पाँव तक उसने सारे शरीर को धीरे धीरे टटोला। हर टटोल पर उसका

हाथ रुक जाता और पीडा वढ जाती, पर करती क्या ?

जगिया का चिपचिप करता गमछा, अव भी उसकी कमर मे बँधा था, उसे हटाकर जानकी ने अलग किया। पेट और पीठ से, चिपचिपाहट के साथ, मैल की वाटें उतर रही थी। उसकी हथेलिया और पगथलिया फटी हुई थी। बियाउ, चमडी के भीतर तक चली गई थी। उसने अपने ग्राढने से सारा पसीना पोछा उसका। उसका मैला कुचेता काछिया भी निकाल वाहर फका उसने। कपडो की सफाई तो दूर, सोच रहा थी किसी जि द ने छोरे को शरीर पर, लोटा पानी डालने का ही अवसर नही दिया। उसने कमर की मोरी पर अगुली फरा, कछिए की कसी हुई डोरी धार की तरह चमडी के भीतर बैठ गई थी। कमर के चारो ओर एक गोल गहरा निशान वन गया था। साचा, 'दादा को कहूँ कुछ, फिर दखा, ठीक नहा, वह और दुखी होगा, उसने तो पहले ही कह दिया है, वाई सारा कसूर मेरा है।"

मा की चेतना का सहवास पाकर, जगिया की उखडती जीवन गति जमने लगी। मा एक वार उठी। बोली, "जगिया ?"

उसने आखे खोलदी। सामने देखती माँ, उसकी सारी चेतना मे समा गई।

"क्या दुखता है रे ?" वह फिर वोली। वह देखता रहा सामने। लौटती याद, वीमार वन्धा का तोडती, उमकी वाणी पर बैठसहसा बोल उठी, "माँ !" औरमाँ उसके साथ फिर सोगई। वह चिपक गया उसकी छाती से—जसे कोई भागती छिपकली, किसी दीवार के चिपक जाती है, लेकिन माँ जड दीवार नही है—प्राण रिसते हैं उमसे। मा, मा के साथ आँखें वह उठी उसकी। उसकी आवाज मे विखरा—"माँ होटल नही जाऊँगा।" "तुम्हे कभी नही भेजूगी, कभी नही, सोया रह तू, मैं सोई हूँ तेरे साथ।" "माँ, तुम मत जावो," 'नही जाऊँगी', वह कसकर इस तरह लग

गया मा स, जस उस कोई छुडा न ले। बुखार गतिमान होने लगा।

दो मिनट बाद उसे कल्लू और वद की पदचाप सुनाई पडी। वह उठ बैठी। वैदजी ने देखा उसे। बाले, "बाई, मियादी है बुखार तो, दिन लगेगे पर घबराने की कोई बात नही, अब तो दवा द देता हूँ मैं, पूरा निदान सुबह करूँगा।" वदजी और कल्लू चले गए।

जगिया इस समय, अपने झोपडे म, खटिया पर सोया है। उसे पानीझरा है। वैद्य ने बताया है कि उसे इक्कीस दिन लगेंगे। पुरानी गुदडी डाले, उसकी माँ, दिन भर उसके पास बठी रहती है। उकला हुआ पानी, चाय का घूट, लोग, ब्राह्मी वटी, गोली, घासा दिन मे कई बार उसे देती है। नीद मे जगिया कभी-कभी बडबडाने लगता है "लाया साब, लो बाबूजी, हा साब साबनी नही माताजी। आ सूरजिया तेरे को सुलाऊँ, सरदी लगती है तुम्हे, एक कचौरी स क्या होगा रे ? दिन भर का भूखा है, जा मत सूरजिया, सूरजिया को रोको, उसकी भाभी मारती है, अरे वह गया ?

थोडा रुककर वह फिर बडबडाया, "देखा मा, मेरी तरफ आख निकालता है कहता है फिर सुलाएगा कभा, हीरा बदमाश है, सूरजिया को मारता है।"

यह सब उसकी मा के कुछ भी समझ मे नही आता है। वह आँसू पटकती सोचती रहती है कि क्या हो गया है इसके ? छीज कर वह आधी हो रही है। पास मे बैठी, बूढी पडोसिन कहती है, "जगिया की मा, भैरूजी का दोस है इसे, पाँच रुपये का प्रसाद बोल।" वह पडोसिन का कहना मान लेती है। बडबडाना फिर भी उसका बन्द नही होता। तभी वह कह उठता है, "छोड मुझे, मेरा नीम सूख गया है, पानी देने दे मुझे, देख नया पत्ता निकल गया है उसमे। एक, दो, तीन दौडता हूँ।"

रात को मा उसके साथ सोजाती है। बुखार तज हो जाता है। वह मा की छाती से चिपका हुआ बडबडाता है, "मा, मैं नही जाऊंगा, देख वह बुलाता है मुझे, देख वह जरदा लगा रहा।"

मा उसके सीने और सिर पर हाथ फेरती कहती है, "जगिया आख खोल बेटा, देख कोई नही है, मैं मार भगाती हूँ, जरदवाले को, तुम्हे मैं कही नही जाने दूगी।"

कई बार वह आँखे खोल देता है। इधर उधर थोडा दख लेता है। बडबडाना कभी ब द और कभी कुछ देर बाद, दो मिनट फिर वैसे ही मा उसकी पीली आँख और उडते चेहरे का देखती रहती है। उसकी उदासी घनी हो जाती है। वह अपने आप कह उठती है, "भगवान यह क्या लीला ह तेरी, यो करता करता यह पागल न हो जाय कही।" अलसाई बेल की तरह पडी रहती है वह। न बेटे को नीन्द और न मा को। बेटा भोजन करता नही, मा को भाता (रुचिकर) नही।

बूढा वद समझाता ह, घबराने की कोई बात नही ह बाई, हो जाएगा ठीक। मियादी है, मियाद पकने पर, अपने आप चला जाएगा। हा पथ्य का ध्यान पूरा रख अब भी, और दम-पन्द्रह दिन ठीक होने के बाद भी।"

"पर ठीक कसे होगा वैदजी, यह तो बडबडाता है ऊटपटाँग ?"

"देखो, भय, पोडा और निराशा जाने अनजाने, इस अबोध की जडा मे बठ गए हैं। वे वात (वायु) जोर से बडबडाने के रूप मे बाहर आ रहे है तो समझो बीमारी बाहर निकल रही है, हरज क्या है इसमे, दवाई हिफाजत से दिए जाओ, ठीक होने के लक्षण हैं ये।"

"वदजी, आपका गुण नही भूलूगी जीवन भर। दुखियारन हूँ।"

अब हफ्ते भर से बडबडाना कुछ कम है।

आज रविवार है, गुरुजी आए है। आगे भी आए थे दो बार, लेकिन उसे देखकर चले गए। एक बजा है इस समय? वे झोपड मे चले गए सीधे। बिना बाजू की एक कुर्सी रखी है खटिया के पास। दस दिन पहले लाई थी जानकी अपनी पडोसिन से। वदजी दिन मे एक बार आते है। उन्हे बैठने के लिए चाहिए इसलिए। गुरुजी बठ गए उस पर। जगिया आखे बन्द किए हुए है। वे बोले, "जगिया?"

"हाँ साब, अभी लाया, लाता हूँ साब", दो पल रुकगया वह, फिर वैसे ही, 'देर हो गई, अब घर क्या लेगा रे, क्या सोएगा अब, जा दुकान माफ कर', और बडबडाना बन्द। गुरुजी ने फिर कहा, "जगिया आँखे खोल तो, देख मेरी तरफ, मैं कौन हूँ।"

उसने आखें खोली। आधी मिनट उनकी तरफ देखता रहा। सूखा चेहरा, पपडी आए होठ, बुभती सी आखें। आँखे वह वापिस बन्द करने लगा तो गुरुजी ने फिर कहा—

"जगिया, पहचानता नही मुझे, तुम्हारा इनाम आया हुआ पडा है, गजी और हाप्पेंट। कब आएगा स्कूल? देख मेरी तरफ देख।"

उसने फिर खोली आखें। कुछ शक्ति बटोर कर, हड्डियो से चिपकी, चमडी वाले, उसके दुबले हाथ उठे, जुडे धीरे-धीरे, 'णाम गुरुजी, प्र उसके होठों मे ही अटक गया, बाहर नही उभरा। आँखें उसकी सजल हो गईं।

"खुश रह जगिया, तू अब जल्दी ही ठीक होजाएगा रे।"

"जल्दी ही?"

"हाँ बहुत जल्दी ही।"

उसने आखें बन्द करली। छोटे-छोटे कण उसकी आँखो से अब भी बाहर आ रहे थे, लेकिन साथ-साथ उनके विश्वास का

एक महीन अकुर भी उसके सूखे चेहरे की धरती से उभरता जान पडता था। गुरु उठ खडे हुए। जानकी से बोले, "डरो मत, अब वह जल्दी ही ठीक होगा, पर जगिया की माँ, इस पछी के, भीतरी घुटन की कोई सीमा नही है। वह इसकी सारी तहो को फोडकर, कही गहराई मे उतर गई है। मालूम पडता है इसने भूख और नीद खूब निकाली है। दबाव और पराधोनता ने निचो दिया है इसे, तुम्हे भेजना नही चाहिए था।"

"गुरुजी दोस किसको दू, गलती मेरी ही समभो। अभाव मे सभाव बदल जाता है।"

"चलो कोई बात नही, ठीक हो जाएगा तो सब कुछ है। दस बीस दिन ध्यान इतना ही रखना कि वह कोई कुपथ्य न खा ले। भगवान तुम्हारी मदद करेगा।"

"आपकी जुबान फले गुरुजी।"

"सुना है अब तो सुजानसिह भी माग की ओर मुडा है ?"

"हाँ गुरुजी, आपके धर्म से, एक भट्ठे पर चौकीदारी मिल गई है।"

"शराब छोड दी बताते है ?"

"अबकी घडी तो छोडदी ही समभो, दिखता धुधला है, वद ने चेता दिया है, अबकी पियोगे तो नजर खो बठोगे।"

"चलो सुबह का भूला, शाम को घर आजाए तो अच्छा ही समभो।"

कल्लू भी आ जाता है यदा कदा। जगिया की सुधरती दशा देखकर, सचमुच उसे बडा सुख मिलता है।

गुरुजी एक दिन और आए। जगिया अब उठता बैठता है। दो टैम थोडा थोडा दूध लेता है। तोला दो तोला अन्न भी उसके पेट मे पहुँचता है। उन्हे देखते ही, जगिया ने उनके पैरो के हाथ लगाया। वे बोले, "बैठ जगिया।"

वठ गया वह और वैठ गए वे भी। बोले, "मुझसे बिना मिले ही कहा चला गया था ?"

वह धीमे से बोला, "स्कूल गया था गुरुजी, आप कस्बे गए थे।"

"अरे हा, मुझे किसी ने बताया भी था, नीम का पानी भी दिया था तूने।"

"हाँ।"

"तेरा नीम मरा तो नही, मरने वाला है रे, आएगा तो डालेगा पानी उसमे ?" उल्लास से बोला वह, "हाँ डालूगा गुरुजी।"

इतने मे उसकी माँ आगई। हाथ जोड कर बोली, "अब आप इसे भले ही पढाना, रोज भेजूगी।'

"अब यह बात तुम्हारी समझ मे कसे आई, मैं तो पहले ही कहता था ?"

"अब गुरूजी, मेरी मोटी बीमारी ठीक हो रही है, खेती करेंगे, चर्खा कातूगी। रोटी एक समय नही भी मिलती तो कोई बात नही, मोटा सिरदद जाता रहा मेरा, फिर क्यो नही पढाऊँ ?"

"ठीक कहती हो तुम, अब मूल पर आई हो तुम, बस यही मैं समझाना चाहता था तुम्हे।"

"जगिया को तो गुरुजी आप छोटा इनाम देंगे, सबसे बडा इनाम तो मुझ दिया है आपने, ज. कभी जगिया मे फूटकर ऊँचा आएगा।"

"जरूर आएगा।"

वे गए, बडे प्रसन्न होकर।

आज बसन्त पचमी है। आध दिन के बाद, शाला में उत्सव मनेगा। *जगिया भी आया स्कूल—थका हुआ और जीवन की* नई सीढियाँ चढता हुआ। पुरानी चमडी उसकी उतर गई है। बाल झड गए है। सिर गजा दिखता है। साफ जांघिया, साफ *कुरता पहने। उसके सभी साथी उसको घेरे हुए हैं। उसे बडे* अचम्भे से देख रहे है—वह बहुत कमजोर और बदरग है इसलिए।

दोपहर की छुट्टी के बाद सारे लडके बैठे है। गुरुजी खडे है। सामने एक कुर्सी पर, सरस्वती का फोटो रखा है। सरस्वती की पूजा प्रार्थना हुई। अगरबत्तियो की महक से सारा कमरा सुवा

सित हो उठा। एक बालक ने सारे बालको के, गुलाल लगाया, जगिया के भी। सभी मे बडा उल्लास है। गुरुजी ने सबको कहा, "देखो तुम्हारा पुराना साथी जगिया फिर आ गया है, तुम्हारी मडली मे। महीने भर दूर रहा, और महीने भर बीमार। सब खुशी से बजाओ ताली।" तालियो की गडगडाहट हुई। एक लडके ने सवाल किया, "गुरुजी कहाँ था, जगिया एक महीना ?"

गुरुजी बोले, "सुनते है आदमी का चेहरा लगाए, किसी भेडिए की माँद मे चला गया था वह।"

एक दूसरे बालक ने फिर सवाल किया, "वहाँ वह इत्ते दिन कैसे रह सका गुरुजी ?"

यह सब तुम्हे कभी जगिया ही बताएगा। अच्छा सुनो सब, जगिया का इनाम रखा है—गजी हाप्पट, पुस्तक, पेंसिल ?"

सबने कहा, "हाँ गुरुजी।"

"तो आज दे दें इसे ?"

"हाँ गुरुजी।"

उन्होने सारे बालको के बीच, उसका इनाम उसे दिया। उसके पतले सूखे होठ कुछ फैल गए और उनके नीचे उसके महीन दातो की उजली कोर, क्षणभर चमक कर फिर उसके होठो के नीचे ही अदीठ हो गई। साथियो ने, तालियो से फिर अपने दोस्त का स्वागत किया।

गुरुजी सभी बालको को नीम के पास ले गए। जगिया भी उनमे था। खीप और बाड थोडी हटाई गई। जगिया ने अपने पतले और काँपते हाथो से एक लोटा पानी उसमे दिया। नीम की तरफ मोटी नजर से दखते हुए, कई लडके बोले, 'अब तो गुरुजी, इसमे पानी डालना फिजूल है—गया ही समझो यह।" नीम से सटे हुए जगिया और उसके दो एक साथियों ने नीम को बडे ध्यान मे दखा। वे बोले, "बहुत ही छोटी छोटी दो पत्तियाँ उसमे उठ

तो रही है गुरुजी।"

दूसरे ने कहा, "हाँ महीन और कुछ लाल-लाल।"

गुरुजी बोले, "देखो बालको, यह पिछला बालक ठीक कह रहा है। यह लाल-लाल ही जीवन है धरती का। हम इसी अरुणोदय की उपासना करते है। इसी हल्की पतली लाली मे एक बहुत बडी छाया, दूर-दूर तक जानेवाली उसकी सुगन्ध और उसके अनगिन फल छिपे है—ठीक है न ?"

सभी बोले, "हा गुरुजी।"

"ऐसी ही एक लाली तुम सब मे भी फूट रही है रे! उसकी भी सुगन्ध आगे चलकर, खूब दूर दूर तक जाए, धरती यही चाहती है। जगिया का यह साथी,'हम सबका साथी है, बोलते क्यो नही ?"

"हाँ गुरुजी," और सारे लडके एक बार फिर नीम की ओर ध्यान से देखने लग। अब की बार सबको दीखी नन्ही, हल्की लाल पत्तियाँ। सारे बालक मुस्करा उठे।

जगिया अपने इस पुराने साथी के चेहरे पर, लाली फूटते देख, सचमुच बेहद प्रसन्न है।

□ □